रजिस्ट्री सं. डी.एल.- 33004/99 REGD. No. D. L.-33004/99

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

सी.जी.-डी.एल.-अ.-25022023-243923
CG-DL-E-25022023-243923

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4
PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 117] नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, फरवरी 23, 2023/फाल्गुन 4, 1944
No. 117] NEW DELHI, THURSDAY, FEBRUARY 23, 2023/PHALGUNA 4, 1944

भारतीय उपचर्या परिषद्

अधिसूचना

नई दिल्ली, 22 फरवरी, 2023

भारतीय उपचर्या परिषद् (आयुर्वेद स्पेशियलिटी नर्सिंग में पोस्ट बेसिक डिप्लोमा – आवासीय कार्यक्रम) विनियम, 2022

फा.सं. 11–1/2022–आईएनसी.–समय–समय पर यथासंशोधित भारतीय उपचर्या परिषद् अधिनियम, 1947 (1947 का XLVIII) की धारा 16(1) के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, भारतीय उपचर्या परिषद् एतद्द्वारा निम्नलिखित विनियम बनाती है, यथाः–

1. लघु शीर्षक एवं प्रवर्तन

i. ये विनियम **भारतीय उपचर्या परिषद् (आयुर्वेद स्पेशियलिटी नर्सिंग में पोस्ट बेसिक डिप्लोमा – आवासीय कार्यक्रम) विनियमन, 2022** कहे जाएंगे।

ii. ये विनियम भारत के राजपत्र में इनकी अधिसूचना की तिथि से प्रभावी होंगे।

2. परिभाषाएं

इन विनियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,

i. 'अधिनियम' का अभिप्राय समय–समय पर यथासंशोधित भारतीय उपचर्या परिषद्, 1947 (1947 का XLVIII) से है;

ii. 'परिषद्' का अभिप्राय अधिनियम के तहत गठित भारतीय उपचर्या परिषद् से है;

iii. 'एसएनआरसी' का अभिप्राय संबंधित राज्य सरकारों द्वारा किसी भी नाम से गठित राज्य उपचर्या एवं प्रसाविका पंजीकरण परिषद् से है;

iv. 'आरएन एंड आरएम' का अभिप्राय एक पंजीकृत उपचर्या एवं पंजीकृत प्रसाविका (आरएन एंड आरएम) से है और एक ऐसे नर्स को दर्शाता है जिसने मान्यता प्राप्त नर्सिंग स्नातक (बी.एससी. नर्सिंग) या डिप्लोमा इन जनरल नर्सिंग एंड मिडवाइफरी (जीएनएम) पाठ्यक्रम, जैसा कि परिषद् द्वारा निर्धारित किया गया हो, सफलतापूर्वक पूरा कर लिया हो और किसी एक एसएनआरसी में पंजीकृत उपचर्या एवं पंजीकृत प्रसाविका के रूप में पंजीकृत हो;

v. 'नर्स पंजीकरण एवं ट्रैकिंग प्रणाली (एनआरटीएस)' का अभिप्राय भारतीय उपचर्या परिषद् द्वारा राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (एनआईसी), भारत सरकार के सहयोग से विकसित सॉफ्टवेयर प्रणाली से है, जिसे भारतीय उपचर्या रजिस्टर के रखरखाव व संचालन के लिए एनआईसी द्वारा हॉस्ट किया गया है। इसमें पंजीकृत उपचर्या एवं पंजीकृत प्रसाविका (आरएन एंड आरएम)/पंजीकृत सहायक नर्स मिडवाइफ (आरएएनएम)/पंजीकृत महिला स्वास्थ्य परिदर्शिका (आरएलएचवी) के आंकड़ों के संग्रह के लिए 'आधार' बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण पर आधारित मानकीकृत प्रारूप हैं;

vi. 'एनयूआईडी' का अभिप्राय एनआरटीएस प्रणाली द्वारा प्रत्याशी को दिया जाने वाला नर्सेज यूनिक आइडेंटिफिकेशन नंबर से है;

vii. 'जनरल नर्सिंग एंड मिडवाइफरी (जीएनएम)' का अभिप्राय परिषद् द्वारा अधिनियम की धारा 10 के तहत स्वीकृत तथा अधिनियम की अनुसूची के भाग–I में शामिल डिप्लोमा इन जनरल नर्सिंग एंड मिडवाइफरी प्रशिक्षण से है।

आयुर्वेद स्पेशियलिटी नर्सिंग में पोस्ट बेसिक डिप्लोमा – आवासीय कार्यक्रम

I. प्रस्तावना

आयुर्वेद नर्सिंग एक नई विशेषता है जिसका उद्देश्य ऐसी विशेषज्ञ नर्सों को तैयार करना है जो विभिन्न स्वास्थ्य मुद्दों के लिए आयुर्वेद उपचार के इच्छुक रोगियों को सक्षम देखभाल प्रदान कर सकें। आयुर्वेद के अनुसार, परिचारक (नर्स) स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली के प्रमुख स्तंभों (चिकित्सीय चतुर्पाद) में से एक है। शास्त्रों में आयुर्वेद नर्सिंग के संबंध में विस्तृत दिशानिर्देशों का उल्लेख किया गया है।

आधुनिक स्वास्थ्य चुनौतियों के लिए उपचार में अंतराल को भरने पर जोर देते हुए आयुष प्रणाली को आधुनिक चिकित्सा प्रणाली में एकीकृत करने की आवश्यकता महसूस की गई है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 में आयुष प्रणाली को चिकित्सा और नर्सिंग कर्मियों की समझ के अनुसार रोगी देखभाल में प्रयोग के लिए एक अनुकूल तरीके से शुरू करना प्रस्तावित है।

II. दर्शन

परिषद् का मानना है कि पंजीकृत नर्सों को अभ्यास के विभिन्न उभरते विशिष्ट क्षेत्रों में कार्य करने के लिए विशेषज्ञ नर्सों के रूप में आगे प्रशिक्षित होने की आवश्यकता है और यह प्रशिक्षण योग्यता आधारित होना चाहिए। आयुर्वेद नर्सिंग, विशेषज्ञ नर्सों की जरूरत वाला ऐसा ही एक क्षेत्र है। नर्सों की बढ़ती भूमिकाओं और स्वास्थ्य देखभाल वितरण प्रणाली में आए बदलाव के मद्देनजर आयुर्वेद स्वास्थ्य केंद्रों में रोगियों को सक्षम, कुशल और उचित देखभाल प्रदान करने हेतु नर्सों को विशेष कौशल और जानकारी प्रदान करने के लिए अतिरिक्त प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। रोगियों को सक्षम देखभाल प्रदान करने और उनके जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए पंजीकृत नर्सों को आयुर्वेद नर्सिंग देखभाल के नैदानिक और सामुदायिक समायोजन में प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है।

III. पाठ्यक्रम संरचना

आयुर्वेद स्पेशियलिटी नर्सिंग में पोस्ट बेसिक डिप्लोमा एक एक–वर्षीय आवासीय कार्यक्रम है और इस पाठ्यक्रम की अवधारणा विशेष नर्सिंग अभ्यास के लिए प्रमुख विशिष्ट पाठ्यक्रमों को शामिल करते हुए की गई है। प्रमुख विशिष्ट पाठ्यक्रम संस्कृत का परिचय, आयुर्वेद की मूल अवधारणाएं, शरीर रचना एवं शरीर क्रिया विज्ञानम, निदानम एवं मानसिक रोगी परिचारण, द्रव्यगुण एवं भैषज्य कल्पना विज्ञानम, स्वास्थ्यवृत्त एवं योग, शल्य कर्म परिचारण, शालक्य कर्म परिचारण, शिशु परिचारण, स्त्री रोग एवं प्रसूति तंत्र परिचारण तथा पंचकर्म के तहत आयोजित किए गए हैं।

व्यावसायिक कुशलता, संवाद तथा रोगी प्रशिक्षण, नैदानिक नेतृत्व तथा संसाधन प्रबंधन, और साक्ष्य आधारित तथा अनुप्रयुक्त शोध, आयुर्वेद नर्सिंग अभ्यास के मूलभूत लघु पाठ्यक्रम हैं, जिनका उद्देश्य छात्रों को जवाबदेह, प्रतिबद्ध, सुरक्षित और सक्षम विशेषज्ञ नर्स के रूप में कार्य करने के लिए आवश्यक जानकारी, दृष्टिकोण और दक्षता प्रदान करना है।

आयुर्वेद स्पेशियलिटी नर्सिंग में पोस्ट बेसिक डिप्लोमा – आवासीय कार्यक्रम की पाठ्यचर्या संरचना निम्नलिखित **चित्र 1** में दर्शायी गई है।

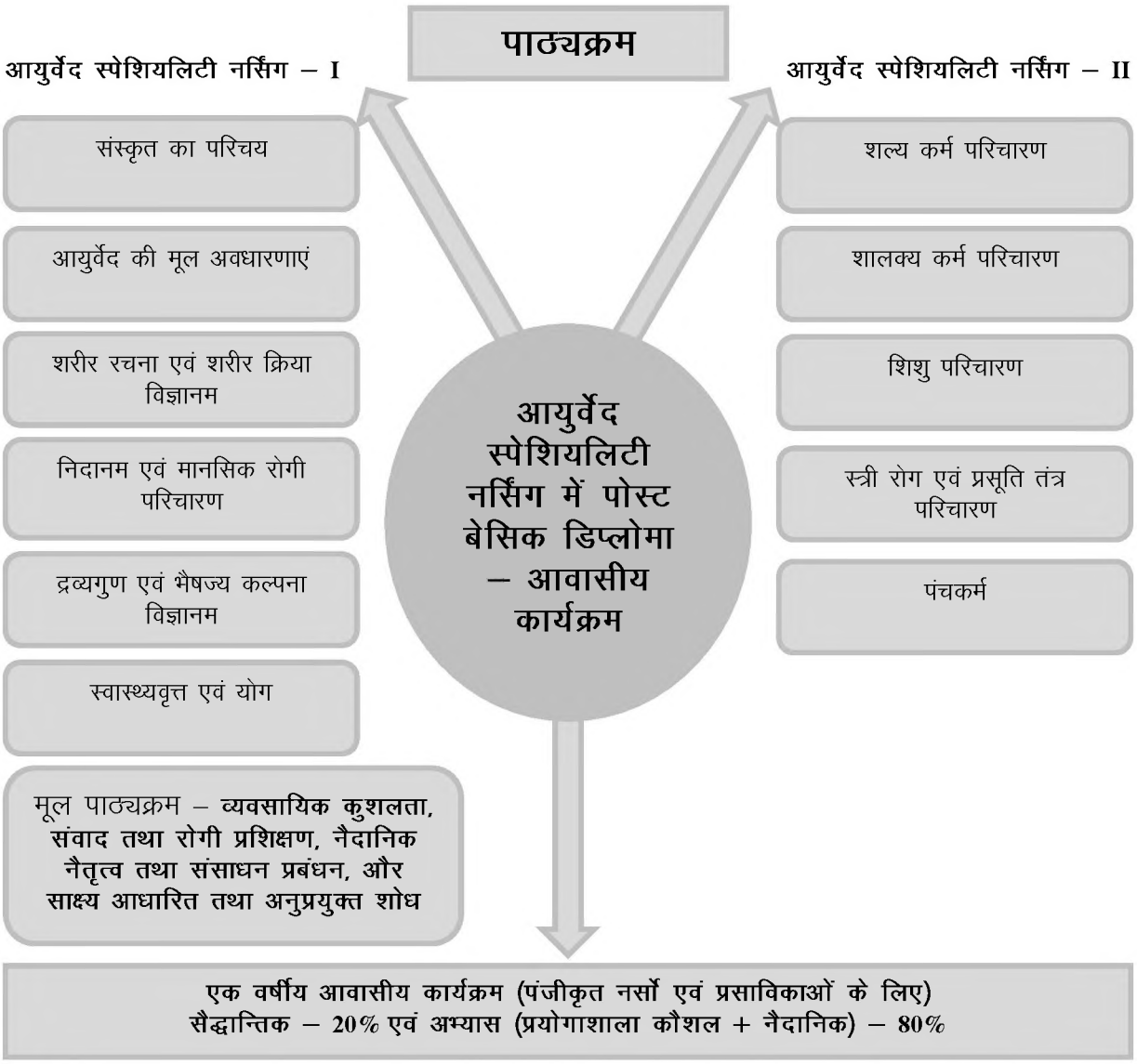

चित्र 1 : पाठ्यक्रम संरचनाः आयुर्वेद स्पेशियलिटी नर्सिंग में पोस्ट बेसिक डिप्लोमा – आवासीय कार्यक्रम

IV. उद्देश्य/प्रयोजन एवं कार्यनिर्वाह क्षमताएं

उद्देश्य

यह कार्यक्रम आयुर्वेद अस्पतालों में भर्ती विभिन्न विकारों से ग्रस्त रोगियों को गुणवत्तापूर्ण देखभाल प्रदान करने हेतु विशेष कौशल, समझ और दृष्टिकोण के साथ नर्सों को तैयार करने के लिए बनाया गया है। इसका उद्देश्य तकनीकी रूप से योग्य और प्रशिक्षित विशेषज्ञ नर्स तैयार करना है जो उच्च–स्तरीय देखभाल प्रदान करते हुए आयुर्वेद स्वास्थ्य केंद्रों में प्रभावी ढंग और अधिक बेहतर तरीके से कार्य करेंगे।

प्रयोजन

पाठ्यक्रम का प्रयोजन नर्सों को निम्नलिखित दक्षताओं में प्रशिक्षित करना है:

1. आयुर्वेद अस्पतालों में भर्ती वास्तविक या संभावित स्वास्थ्य समस्याओं वाले रोगियों को गुणवत्तापूर्ण देखभाल प्रदान करना।
2. नैदानिक और सामुदायिक समायोजन में रोगियों की देखभाल का प्रबंधन और पर्यवेक्षण करना।
3. आयुर्वेद नर्सिंग से संबंधित क्षेत्रों में नर्सों, संबद्ध स्वास्थ्य कर्मियों, रोगियों और समुदाय को प्रशिक्षित करना।
4. आयुर्वेद नर्सिंग के क्षेत्रों में शोध करना।

कार्यनिर्वाह क्षमताएं

कार्यक्रम के पूरा होने पर, आयुर्वेद विशेषज्ञ नर्स निम्नलिखित कार्य करने में सक्षम होंगे :

1. आयुर्वेद नर्सिंग अभ्यास की अवधारणाओं, सिद्धांतों और मानकों की व्याख्या करना।

2. आयुर्वेद अभ्यास में आईएनसी मानकों के अनुसार सदाचारी, परोपकारी, कानूनी, नैतिक, विनियामक और मानवतावादी सिद्धांतों के अनुरूप नर्सिंग देखभाल प्रदान करने में पेशेवर जवाबदेही प्रदर्शित करना।
3. रोगियों, परिजनों और व्यावसायिक सहयोगियों के साथ प्रभावी ढंग से बातचीत करना जिससे पारस्परिक सम्मान की भावना को बढ़ावा मिले और स्वास्थ्य परिणामों में सुधार लाने के साझा निर्णय लिए जा सकें।
4. उपचार और देखभाल में रोगियों तथा परिजनों की प्रभावी रूप से भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए उन्हें प्रशिक्षित करना और परामर्श देना तथा संकट एवं वियोग की परिस्थितियों में उनकी मुकाबला करने की क्षमता में वृद्धि करना।
5. नैदानिक नेतृत्व और संसाधन प्रबंधन रणनीतियों की समझ का प्रदर्शन करना और सहयोगी तथा प्रभावी दलीय कार्य को बढ़ावा देने के लिए आयुर्वेद देखभाल समायोजन में उनका उपयोग करना।
6. आयुर्वेद नर्सिंग अभ्यास में व्यावहारिक निर्णय लेने के लिए नैदानिक विशेषज्ञता और रोगी की वरीयताओं के लिहाज से, अनुभव और मूल्यों के साथ आयुर्वेद देखभाल और उपचार में सामयिक सर्वोत्तम प्रमाणों की पहचान, मूल्यांकन और उपयोग करना।
7. ऐसे शोध अध्ययनों में भाग लेना, जो शोध प्रक्रिया की मूलभूत समझ के साथ–साथ साक्ष्य–आधारित आयुर्वेद नर्सिंग देखभाल मध्यवर्तन में योगदान करते हैं।
8. विभिन्न विकारों से ग्रस्त रोगियों तथा उनके परिजनों की दैहिक, शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और आध्यात्मिक समस्याओं के आंकलन, निदान और उपचार में सामान्य विज्ञान को अपनाना।
9. विभिन्न विकारों से ग्रस्त रोगियों की देखभाल में नर्सिंग प्रक्रिया को अपनाना।
10. आयुर्वेद में विभिन्न उपचार पद्धतियों के सिद्धांतों और उपचार के तौर–तरीकों का वर्णन करना।
11. विभिन्न उपचार पद्धतियों के तहत रोगियों की देखभाल प्रदान करने से प्रासंगिक विशेष अभ्यास, दक्षता/कौशल प्रदर्शित करना।
12. जीवनशैली संशोधन, आहार प्रबंधन और योग जैसी विभिन्न तकनीकों के माध्यम से पुनर्वास उपायों में दक्षता विकसित करना।
13. विभिन्न औषधियों हेतु औषधि प्रबंधन, भंडारण, प्रशासन तथा अनुरक्षण पद्धति की समझ विकसित करना।
14. रोगियों को विभिन्न उपचारों के सुरक्षित प्रयोग का प्रदर्शन करना और उन्हें व्यावसायिक नुकसान से बचाना।
15. आयुर्वेद स्वास्थ्य केन्द्रों में नैदानिक परीक्षण करना और गुणवत्ता आश्वासन गतिविधियों में भाग लेना।
16. नर्सों और संबद्ध स्वास्थ्य कर्मियों को प्रशिक्षित करना और उनकी निगरानी करना।
17. आयुर्वेद अस्पतालों में भर्ती रोगियों की देखभाल में अन्य स्वास्थ्य देखभाल प्रदाताओं के साथ सहयोग करना और संसाधनों का उपयोग करना।

V. कार्यक्रम का विवरण और अभ्यास का क्षेत्र

आयुर्वेद स्पेशियलिटी नर्सिंग में पोस्ट बेसिक डिप्लोमा – आवासीय कार्यक्रम एक एक–वर्षीय आवासीय कार्यक्रम है जिसमें योग्यता आधारित प्रशिक्षण पर मुख्य ध्यान दिया जाता है। इसके अतिरिक्त इसे पंजीकृत नर्सों (जीएनएम या बी.एससी.) को रोगियों और उनके परिजनों को गुणवत्तापूर्ण आयुर्वेद नर्सिंग देखभाल प्रदान करने में विशेष जानकारी, कौशल और दृष्टिकोण के साथ तैयार करने के लिए बनाया गया है। सैद्धांतिक पाठ्यक्रम में अभ्यास के साथ–साथ विशेष पाठ्यक्रम शामिल हैं। सैद्धांतिक घटक 20% और व्यावहारिक (नैदानिक और प्रयोगशाला) 80% का है। कार्यक्रम पूरा होने पर प्रमाणीकरण एवं संबंधित एसएनआरसी में अतिरिक्त योग्यता के रूप में पंजीकरण होने पर आयुर्वेद विशेषज्ञ नर्स को विशेषज्ञ नर्स के रूप में केवल विशिष्ट अस्पताल/विभाग/इकाई में ही नियोजित किया जायेगा। सरकारी/सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में विशेषज्ञ नर्स संवर्ग/पद सृजित किए जाने चाहिए। डिप्लोमा प्रमाणपत्र परिषद् द्वारा अनुमोदित संबंधित परीक्षा बोर्ड/एसएनआरसी/विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान किया जाएगा।

VI. आयुर्वेद स्पेशियलिटी नर्सिंग में पोस्ट बेसिक डिप्लोमा – आवासीय कार्यक्रम प्रारम्भ करने हेतु न्यूनतम अहर्ताएं/दिशानिर्देश

कार्यक्रम का संचालन कहां–कहां किया जा सकता है:

1. आयुर्वेद में उच्च अध्ययन (स्नातक/स्नातकोत्तर) की पेशकश करने वाले आयुर्वेद अस्पताल, जिसमें सभी प्रकार की विशेष नर्सिंग देखभाल सुविधाओं के साथ नैदानिक, चिकित्सीय और अत्याधुनिक आयुर्वेद चिकित्सा इकाइयों के साथ न्यूनतम 100 शय्या उपलब्ध हों।
2. उपरोक्त पात्र संस्थान को संबंधित एसएनआरसी से विशेष शैक्षणिक वर्ष के लिए आयुर्वेद स्पेशियलिटी नर्सिंग में पोस्ट बेसिक डिप्लोमा – आवासीय कार्यक्रम प्रारंभ करने हेतु मान्यता लेनी होगी, जोकि एक अनिवार्य आवश्यकता है।
3. परिषद् द्वारा उपरोक्त दस्तावेजों/प्रस्ताव की प्राप्ति के पश्चात मान्यता प्राप्त नर्सिंग प्रशिक्षण संस्थान का भारतीय उपचर्या परिषद् अधिनियम, 1947 के प्रावधानों के तहत बनाए गए विनियमों के अनुरूप अध्यापन संकाय, नैदानिक एवं मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता के संबंध में उपयुक्तता का आंकलन करने के लिए भारतीय उपचर्या परिषद् अधिनियम, 1947 की धारा 13 के तहत वैधानिक निरीक्षण किया जाएगा।

1. नर्सिंग शिक्षण संकाय

क. 1:10 के अनुपात में पूर्णकालिक नर्सिंग संकाय/नर्सिंग प्रीसेप्टर।
ख. आयुर्वेद क्षेत्र से संबंधित विशेषज्ञताओं में बहु–विषयक अतिथि संकाय (प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर और सहायक प्रोफेसर)।
ग. नर्सिंग संकाय की न्यूनतम संख्या दो होनी चाहिए। (एक एम.एससी. (नर्सिंग) होना चाहिए)

पात्रता मानदंड (योग्यता और अनुभव)

- **नर्सिंग संकायः**

  बी.एससी. (नर्सिंग) आयुर्वेद, राजकीय विश्वविद्यालय/एसएनआरसी द्वारा मान्यता प्राप्त हो।

  या

  परिषद् द्वारा मान्यता प्राप्त आयुर्वेद नर्सिंग में एक–वर्षीय पोस्ट बेसिक डिप्लोमा के साथ एम.एससी. (नर्सिंग)। एनयूआईडी नंबर के साथ किसी भी एसएनआरसी में एक पंजीकृत उपचर्या एवं पंजीकृत प्रसाविका (आरएन एंड आरएम) या समकक्ष हो।

  या

  परिषद् द्वारा मान्यता प्राप्त आयुर्वेद नर्सिंग में एक–वर्षीय पोस्ट बेसिक डिप्लोमा के साथ बी.एससी. (नर्सिंग)/पोस्ट बेसिक बी.एससी. (नर्सिंग)। एनयूआईडी नंबर के साथ किसी भी एसएनआरसी में एक पंजीकृत उपचर्या एवं पंजीकृत प्रसाविका (आरएन एंड आरएम) या समकक्ष हो।

  - **अनुभवः** प्रतिष्ठित आयुर्वेद अस्पताल में न्यूनतम 2 वर्ष का अनुभव
  - **प्रीसेप्टर**

    मेडिकल प्रीसेप्टरः स्नातकोत्तर योग्यता के साथ विशेषज्ञ (आयुर्वेद विशेषज्ञ) डॉक्टर (स्नातकोत्तर योग्यता प्राप्त करने के बाद 3 वर्ष के अनुभव और संकाय स्तर/सलाहकार स्तर वालों को वरीयता दी जाएगी)

    नर्सिंग प्रीसेप्टरः

    राजकीय विश्वविद्यालय/एसएनआरसी द्वारा मान्यता प्राप्त बी.एससी. (नर्सिंग) आयुर्वेद।

    या

    एम.एससी. (नर्सिंग) के साथ प्रतिष्ठित आयुर्वेद अस्पताल में एक वर्ष का अनुभव। एनयूआईडी नंबर के साथ किसी भी एसएनआरसी में एक पंजीकृत उपचर्या एवं पंजीकृत प्रसाविका (आरएन एंड आरएम) या समकक्ष हो।

    या

    बी.एससी. (नर्सिंग)/पोस्ट बेसिक बी.एससी. (नर्सिंग) के साथ प्रतिष्ठित आयुर्वेद अस्पताल में दो वर्ष का अनुभव। एनयूआईडी नंबर के साथ किसी भी एसएनआरसी में एक पंजीकृत उपचर्या एवं पंजीकृत प्रसाविका (आरएन एंड आरएम) या समकक्ष हो।

  - **प्रीसेप्टर–छात्र अनुपातः नर्सिंग 1:10, मेडिकल 1:10**
    (प्रत्येक छात्र के लिए एक मेडिकल और नर्सिंग प्रीसेप्टर होना चाहिए)

2. बजट

संस्थान के समग्र बजट में कार्यक्रम के लिए आवश्यक कर्मचारियों और छात्रों के वेतन, अंशकालिक शिक्षकों के लिए मानदेय, लिपिकीय सहायता, पुस्तकालयी और आकस्मिक व्यय हेतु बजटीय प्रावधान होना चाहिए।

3. अस्पताल/कॉलेज में भौतिक एवं शक्षणिक सुविधाएं

क. नैदानिक क्षेत्र में अध्ययन कक्ष/सम्मेलन कक्षः 1

ख. कौशल प्रयोगशालाओं के लिए विभिन्न पंचकर्म और क्रियाकल्प थियेटर तथा भैषज्य कल्पना विभाग हों।
कौशल प्रयोगशाला/थियेटर विवरण परिशिष्ट–1 में सूचीबद्ध हैं।

ग. ऑनलाइन पत्रिकाओं तक पहुंच के साथ पुस्तकालय एवं कम्प्यूटर सुविधाएंः

- आयुर्वेद, नर्सिंग प्रशासन, नर्सिंग शिक्षा, नर्सिंग शोध और सांख्यिकी में नवीनतम पाठ्यपुस्तकों और पत्रिकाओं और पत्र–पत्रिकाओं से सुसज्जित संस्थागत पुस्तकालय। नर्सों और आयुर्वेद नर्सिंग छात्रों को संस्थागत पुस्तकालय का उपयोग करने की अनुमति होनी चाहिए।
- इंटरनेट सुविधा के साथ कंप्यूटर
- ई–लर्निंग सुविधाएं

घ. शिक्षण संसाधनः निम्न सुविधाओं के साथ स्मार्ट अध्ययन कक्षः

- स्लाइड प्रोजेक्टर
- टीवी
- वीडियो देखने की सुविधा
- एलसीडी प्रोजेक्टर
- कम्प्यूटर
- इंटरनेट सुविधा
- आयुर्वेद उपचार और चिकित्सा हेतु कौशल प्रदर्शन के लिए उपकरण
- मैनीकिंस और सिमुलेटर, यदि सुविधा उपलब्ध हो

ङ. कार्यालयी सुविधाएंः

- टंकक/डीईओ, एमटीएस/चपरासी, सफाई कर्मचारी की सेवाएं

- कार्यालय, उपकरण और संसाधन जैसे लेखन सामाग्री, प्रिंटर के साथ कम्प्यूटर, जीरोक्स मशीन आदि की सुविधाएं।

4. नैदानिक सुविधाएं

क. मूल आयुर्वेद अस्पताल में नैदानिक, चिकित्सीय और अत्याधुनिक आयुर्वेद चिकित्सा इकाइयों के साथ न्यूनतम 100 शय्या हों।

ख. अस्पताल में उन्नत नैदानिक, चिकित्सीय देखभाल सुविधाएं होनी चाहिए।

ग. इकाई में सेंट्रल काउंसिल ऑफ इंटीग्रेटेड मेडिसिन (सीसीआईएम)/एसआईयू मानदंडों के अनुसार प्रति शिफ्ट नर्स स्टाफ।

घ. छात्र–रोगी अनुपात – 1:3

5. प्रवेश हेतु नियम व शर्तें/प्रविष्टि अर्हताएं

इस कार्यक्रम में प्रवेश पाने वाले छात्र को:

क. एनयूआईडी नंबर के साथ किसी भी एसएनआरसी में एक पंजीकृत उपचर्या एवं पंजीकृत प्रसाविका (आरएन एंड आरएम) या समकक्ष होना चाहिए।

ख. स्टाफ नर्स के रूप में कम से कम एक वर्ष का नैदानिक अनुभव होना चाहिए।

ग. अन्य देशों की नर्सों को प्रवेश से पहले परिषद् से समकक्षता प्रमाणपत्र प्राप्त करना होगा।

घ. शारीरिक रूप से स्वस्थ होना चाहिए।

ङ. चयन सक्षम प्राधिकारी द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा/साक्षात्कार की योग्यता के आधार पर होना चाहिए।

6. सीटों की संख्या

क. 100–200 शय्या वाले अस्पतालों के लिए, सीटों की संख्या – 20 सीटें

ख. 200–500 शय्या वाले अस्पतालों के लिए सीटों की संख्या – 40 सीटें

ग. 500 से अधिक शय्या वाले अस्पतालों के लिए, सीटों की संख्या – 60 सीटें

7. अभ्यर्थियों की संख्या

3 शय्या के लिए एक अभ्यर्थी

8. वेतन

क. सेवारत अभ्यर्थियों को नियमित वेतन मिलेगा।

ख. अन्य अभ्यर्थियों के लिए वेतन उस अस्पताल की वैतनिक संरचना के अनुसार होगा, जहां पाठ्यक्रम आयोजित किया जाता है।

VII. परीक्षा विनियम एवं प्रमाणीकरण

परीक्षा विनियम

निरीक्षण और डिप्लोमा प्रदान करने वाला प्राधिकरण: परिषद् द्वारा अनुमोदित संबंधित परीक्षा बोर्ड/एसएनआरसी/विश्वविद्यालय।

1. परीक्षा में बैठने हेतु पात्रता

क. उपस्थिति: सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक – 80%, लेकिन, प्रमाणन से पहले 100% नैदानिक उपस्थिति पूरी करनी होगी।

ख. लॉगबुक और नैदानिक आवश्यकताओं जैसी जरूरी आवश्यकताओं को सफलतापूर्वक पूरा करने वाले उम्मीदवार पात्र होंगे और अंतिम परीक्षा में बैठ सकते हैं।

2. प्रायोगिक परीक्षा

क. प्रायोगिक/नैदानिक अवलोकन: अंतिम आंतरिक और बाह्य परीक्षा में मौखिक परीक्षा सहित वास्तविक परिस्थितियों में नैदानिक प्रदर्शन का आंकलन। 3–4 घंटे के लिए लघु नैदानिक मूल्यांकन अभ्यास (नर्सिंग प्रक्रिया आवेदन और कार्यविधिक दक्षताओं का प्रत्यक्ष अवलोकन) शामिल होगा। नैदानिक क्षेत्र में आंकलन की न्यूनतम अवधि 5–6 घंटे होगी।

ख. प्रति दिन छात्रों की अधिकतम संख्या: 10 छात्र।

ग. प्रायोगिक परीक्षा नैदानिक क्षेत्र में ही आयोजित की जानी चाहिए।

घ. तीन प्रायोगिक परीक्षकों के दल में, राजकीय विश्वविद्यालय/एसएनआरसी द्वारा मान्यता प्राप्त बी.एससी. (नर्सिंग) आयुर्वेद/परिषद् द्वारा मान्यता प्राप्त एक वर्षीय आयुर्वेद नर्सिंग में पोस्ट बेसिक डिप्लोमा के साथ एम.एससी. (नर्सिंग)/परिषद् द्वारा मान्यता प्राप्त एक वर्षीय आयुर्वेद नर्सिंग में पोस्ट बेसिक डिप्लोमा के साथ बी.एससी. (नर्सिंग)/पोस्ट बेसिक बी.एससी. (नर्सिंग) (बी.एससी. संकाय – दो वर्ष का अनुभव जिसमें से न्यूनतम एक वर्ष का शिक्षण अनुभव और एम.एससी. संकाय – दो वर्ष का अनुभव, जिसमें से न्यूनतम एक वर्ष का शिक्षण अनुभव

हो) के साथ एक आंतरिक परीक्षक, एक बाह्य परीक्षक (उपरोक्तानुसार योग्यता और अनुभव के साथ) और आयुर्वेद में विशेषज्ञता प्राप्त कोई भी चिकित्सीय संकाय और एक चिकित्सीय आंतरिक परीक्षक जो संबंधित विशेषता कार्यक्रम के लिए प्रीसेप्टर होना चाहिए, शामिल होंगे।

ङ. प्रतिष्ठित आयुर्वेद अस्पताल में दो वर्ष के अनुभव के साथ बी.एससी./एम.एससी. (नर्सिंग), जिसमें से एक वर्ष उसी अस्पताल में शिक्षण अनुभव हो, को शुरू में परीक्षक बनने की अनुमति दी जा सकती है, जब तक कि आयुर्वेद नर्सिंग में पोस्ट बेसिक डिप्लोमा प्रशिक्षित नर्सिंग संकाय परीक्षक उपलब्ध न हों।

च. प्रायोगिक परीक्षक और सैद्धांतिक परीक्षक एक ही नर्सिंग संकाय होने चाहिए।

3. उत्तीर्णता मानक

क. प्रत्येक अभ्यर्थी को उत्तीर्ण होने के लिए सैद्धांतिक और प्रायोगिक परीक्षा के आंतरिक आंकलन और बाह्य परीक्षा दोनों में कुल मिलाकर न्यूनतम 60% अंक प्राप्त करना अनिवार्य है। 60% से कम अंक प्राप्त करने वाले को अनुत्तीर्ण माना जाएगा।

ख. छात्रों को उत्तीर्ण होने के लिए अधिकतम 3 अवसर प्रदान किये जाएंगें।

ग. यदि छात्र सैद्धान्तिक या प्रायोगिक परीक्षा में से किसी एक में अनुत्तीर्ण होता है, तो सैद्धान्तिक या प्रायोगिक परीक्षा में से जिसमें वह अनुत्तीर्ण हुआ है, केवल वही परीक्षा पुनः देनी होगी।

प्रमाणीकरण

क. शीर्षकः आयुर्वेद स्पेशियलिटी नर्सिंग में पोस्ट बेसिक डिप्लोमा – आवासीय कार्यक्रम।

ख. निर्धारित अध्ययन कार्यक्रम के सफल समापन पर परिषद द्वारा अनुमोदित परीक्षा बोर्ड/विश्वविद्यालय द्वारा एक डिप्लोमा से सम्मानित किया जाएगा, जिसमें उल्लेख होगा किः

i. अभ्यर्थी ने आयुर्वेद स्पेशियलिटी नर्सिंग में पोस्ट बेसिक डिप्लोमा – आवासीय कार्यक्रम के तहत पाठ्यक्रम के सभी पहलुओं का अध्ययन पूरा कर लिया है।

ii. उम्मीदवार ने सैद्धान्तिक में 80% और नैदानिक में 100% अर्हताएं पूरा कर ली हैं।

iii. उम्मीदवार ने निर्धारित परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है।

VIII. परीक्षा प्रणाली

पाठ्यक्रम	आंतरिक आंकलन अंक	बाह्य आंकलन अंक	कुल अंक	परीक्षा अवधि घंटे (बाह्य)
सैद्धान्तिकः अनुभविक/आवासीय अध्ययन आयुर्वेद स्पेशियलिटी नर्सिंग (I और II) 1: आयुर्वेद स्पेशियलिटी नर्सिंग–I 2: आयुर्वेद स्पेशियलिटी नर्सिंग–II	25 (10+15)	75 (35+40)	100	3
प्रायोगिकः आयुर्वेद स्पेशियलिटी नर्सिंग ▪ पर्यवेक्षित प्रायोगिक/नैदानिक अवलोकनः मौखिक परीक्षा के साथ–साथ वास्तविक परिस्थितियों में प्रत्यक्ष अवलोकन – 3–4 घंटे का लघु नैदानिक मूल्यांकन अभ्यास (नर्सिंग प्रक्रिया आवेदन व कार्यविधिक दक्षता का प्रत्यक्ष अवलोकन)	75	150	225	नैदानिक क्षेत्र में न्यूनतम 5–6 घंटे
कुल योग	**100**	**225**	**325**	

ओएससीई की सिफारिश की जाती है, लेकिन

यदि कोई ओएससीई शामिल नहीं है, तो आंतरिक प्रायोगिक को घटाकर 50 और बाह्य को 100 किया जा सकता है।

कुल आंतरिक 75 (25 सैद्धांतिक और 50 प्रायोगिक) होंगे। कुल बाह्य 175 (75 सैद्धान्तिक और 100 प्रायोगिक) होंगे।

कुल योग = 75 + 175 = 250

यदि इसे बदला जाता है तो मूल्यांकन दिशानिर्देशों में भी बदलाव करना होगा।

IX. कार्यक्रम की बनावट/संरचना

1. अनुदेश पाठ योजना
2. पाठ्यक्रम का कार्यान्वयन
3. नैदानिक अभ्यास (आवासीय पदस्थापन)
4. प्रशिक्षण विधियां
5. मूल्यांकन विधियां
6. लॉग बुक तथा नैदानिक अर्हताएं

1. अध्ययन निपुणता (कौशल प्रयोगशाला अभ्यास) एवं प्रायोगिक अध्ययन (नैदानिक अभ्यास) दृष्टिकोण अपनाते हुए अनुदेश पाठ योजना

2.

विषय	सैद्धान्तिक घंटे	प्रयोगशाला / कौशल प्रयोगशाला घंटे	नदानिक घंटे
आयुर्वेद स्पेशियलिटी नर्सिंग पाठ्यक्रम			
आयुर्वेद स्पेशियलिटी नर्सिंग–I			
इकाई–1 संस्कृत का परिचय	30		
इकाई–2 आयुर्वेद की मूल अवधारणा	40		
इकाई–3 भाग अः शरीर रचना और भाग बः शरीर क्रिया विज्ञानम (मूल शरीर रचना विज्ञान एवं जीवन पद्धति)	30	10	
इकाई–4 भाग अः निदानम (मेडिकल नर्सिंग) और भाग बः मानसिक रोगी परिचारण (मनोरोग नर्सिंग)	40		200
इकाई–5 भाग अः द्रव्यगुणः (सामान्य औषध विज्ञान) और भाग बः भैषज्य कल्पना विज्ञानम (औषधीय नर्सिंग)	30	10	100
इकाई–6 स्वास्थवृत्त और योग	30	10	150
इकाई–7 **फाउंडेशन** – व्यावसायिक कुशलता, संवाद तथा रोगी प्रशिक्षण, नैदानिक नेतृत्व तथा संसाधन प्रबंधन, और साक्ष्य आधारित तथा अनुप्रयुक्त शोध	30		
आयुर्वेद स्पेशियलिटी नर्सिंग–II			
इकाई–8 शल्य कर्म परिचारण (सर्जिकल नर्सिंग) (भाग अ) और (भाग ब)	30		200
इकाई–9 शालक्य कर्म परिचारण (ईएनटी और नेत्र विज्ञान नर्सिंग)	30		200
इकाई–10 शिशु परिचारण (शिशु चिकित्सा नर्सिंग)	30		145
इकाई–11 स्त्री रोग और प्रसूति तंत्र परिचारण (स्त्री रोग और प्रसूति नर्सिंग)	30		200
इकाई–12 पंचकर्म (भाग अ) और (भाग ब)	50	10	335
कुल : 1970 घंटे	**400 घंटे (10 सप्ताह)**	**40 घंटे (1 सप्ताह)**	**1530 घंटे (33 सप्ताह)**

एक वर्ष में उपलब्ध कुल सप्ताहः 52 सप्ताह

- एएल + सीएल + एसएल + सार्वजनिक अवकाशः 6 सप्ताह
- परीक्षा की तैयारी और परीक्षाः 2 सप्ताह
- सैद्धान्तिक और प्रायोगिकः 44 सप्ताह

2. **पाठ्यक्रम का कार्यान्वयन** (सैद्धान्तिकः 20% और कौशल प्रयोगशाला + नैदानिकः 80%)

ब्लॉक कक्षाएंः 3 सप्ताह × 42 घंटे = 126 घंटे, आवासीय 41 सप्ताह × 45 घंटे प्रति सप्ताह = 1845 घंटे, कुलः 1970 + 1 = 1971 घंटे (1 अतिरिक्त घंटा)

- ब्लॉक कक्षाएंः (सैद्धान्तिक और कौशल प्रयोगशाला अनुभव = 3 सप्ताह × 42 घंटे प्रति सप्ताह (126 घंटे), {सैद्धान्तिक = 120 घंटे, कौशल प्रयोगशाला = 6 घंटे, कुल = 126 घंटे})
- सैद्धान्तिक और कौशल प्रयोगशाला सहित नैदानिक अभ्यास = 41 सप्ताह × 45 घंटे प्रति सप्ताह (1845 घंटे), {सैद्धान्तिक = 281 घंटे, कौशल प्रयोगशाला = 34 घंटे, नैदानिक = 1530 घंटे}

  अर्थात् सैद्धान्तिकः 401 (120 + 281) घंटे, कौशल प्रयोगशालाः 40 (6 + 34) घंटे, नैदानिकः 1530 घंटे = 1971 घंटे (1970 + 1)

o **सैद्धान्तिक के 281 घंटे और कौशल प्रयोगशाल प्रशिक्षण के 34 घंटे को नैदानिक अनुभव के दौरान एकीकृत किया जा सकता ह। छात्रों को प्रशिक्षित करने में निपुण अध्ययन और प्रयोगिक प्रशिक्षण दृष्टिकोण का उपयोग संपूर्ण कार्यक्रम के दौरान किया जाता है।**

कौशल प्रयोगशाला/थियेटर विवरण परिशिष्ट–1 में सूचीबद्ध हैं।

3. **नैदानिक अभ्यास**

नैदानिक आवासीय अनुभवः न्यूनतम 45 घंटे प्रति सप्ताह निर्धारित है, हालांकि अलग–अलग पारियों और प्रत्येक सप्ताह या पखवाड़े ऑन कॉल ड्यूटी करने पर छुट्टी की परिस्थिति के अनुसार होगा।

नैदानिक पदस्थापनः प्रशिक्षण अवधि के दौरान छात्रों का निम्नांकित नैदानिक क्षेत्रों में पदस्थापन किया जाएगा।

क्र.स.	नैदानिक क्षेत्र	सप्ताह	टिप्पणी
1	बाह्य रोगी विभाग	2	क्षेत्रीय दौरे और भ्रमण के लिए अपने स्वयं के आयुर्वेद अस्पताल और प्रतिष्ठित संस्थान
2	एकीकृत ओपीडी (यूनानी सिद्ध और होमियोपैथी)	1	
3	आंतरिक रोगी विभाग	12	
4	पंचकर्म थियेटर (वयस्क और शिशु रोग)	9	
5	क्रियाकल्प थियेटर	4	
6	ऑपरेशन थियेटर और आईसीयू	2	
7	प्रसव कक्ष (एसआरपीटी)	2	
8	औषधालय	2	
9	विभागीय प्रयोगशाला	1	
10	अस्पताल प्रबंधन	1	
11	योग विभाग और स्वास्थवृत्त ओपीडी	2	
12	नैदानिक पैथोलॉजी प्रयोगशाला	1	
13	पैरा–सर्जीकल और प्लास्टर कक्ष	1	
14	चिकित्सा शिविर	1	
कुल		**41 सप्ताह**	

टिप्पणीः आवासीय छात्र अलग–अलग पारियों में स्टाफ नर्स/नर्सिंग अधिकारियों की कार्य–सूची का ही पालन करेंगे। इसके अलावा, 40 सप्ताह तक प्रत्येक सप्ताह 8 घंटे उनके अध्ययन के लिए होंगे, जिन्हें सैद्धांतिक और कौशल प्रयोगशाला अभ्यास के लिए दिया किया जा सकता है (जैसेः संकाय व्याख्यान – 5 घंटे, नर्सिंग व अंतःविषयक् संवाद – 1 घंटा, नैदानिक प्रस्तुतियां/केस स्टडी रिपोर्ट/नैदानिक कार्य – 1 घंटा, कौशल प्रयोगशाला अभ्यास – 1 घंटा), इस प्रकार कुल 281 घंटे सैद्धान्तिक और 34 घंटे कौशल प्रयोगशाला अभ्यास के लिए होंगे। नैदानिक पदस्थापन के दौरान शौध प्रक्रिया के सोपानों पर आधारित एक लघु सामूहिक शोध परियोजना आयोजित की जा सकती है जिसकी लिखित रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होगी।

4. **प्रशिक्षण विधियां**

सैद्धान्तिक, कौशल प्रयोगशाला और नैदानिक शिक्षण निम्नलिखिति पद्धतियों में किए जा सकते हैं और नैदानिक पदस्थापन के दौरान एकीकृत किये जा सकते हैं:

- केस/नैदानिक प्रस्तुति और केस स्टडी रिपोर्ट
- औषधीय अध्ययन और प्रस्तुति
- शय्यागत नैदानिक/नर्सिंग दौरे/अंतर–विषयक दौरे
- नैदानिक संगोष्ठी
- नैदानिक क्षेत्र में संकाय व्याख्यान और चर्चा
- विभिन्न थियेटर तथा शय्यागत प्रस्तुतियां और कौशल प्रशिक्षण
- निर्देशित पठन और स्व–अध्ययन
- भूमिका निर्वहन
- संगोष्ठी/सामूहिक प्रस्तुति
- सामूहिक शोध परियोजना
- नैदानिक कार्य

- रोगी सहभागिता अभ्यास (सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करके स्वास्थ्य परिणामों में सुधार के लिए देखभाल संबंधी निर्णयों में रोगियों को संलग्न करना)। जैसेकिः छुट्टी योजना, अनुवर्ती कार्रवाई और पुनर्वास।
- विभिन्न केंद्रों के शैक्षिक दौरे
- विभिन्न श्रव्य–दृश्य सामग्री का उपयोग करके स्वास्थ्य शिक्षा।

5. मूल्यांकन विधि

- लिखित परीक्षा
- प्रायोगिक परीक्षाः प्रायोगिक अवलोकन (वास्तविक परिस्थितियों में वास्तविक नैदानिक प्रदर्शन का प्रत्यक्ष अवलोकन)
- लिखित कार्य
- परियोजना
- मामले का अध्ययन/देखभाल योजना/नैदानिक प्रस्तुति/औषधीय अध्ययन
- नैदानिक प्रदर्शन मूल्यांकन
- नैदानिक कार्यविधिक दक्षताओं और नैदानिक आवश्यकताओं को पूरा करना

मूल्यांकन दिशानिर्देशों के लिए परिशिष्ट–2 देखें।

6. नैदानिक लॉग बुक/प्रक्रिया पुस्तक

प्रत्येक नैदानिक पदस्थापन के अंत में, नैदानिक लॉग बुक (विशिष्ट कार्यविधिक दक्षताएं/नैदानिक कौशल) **(परिशिष्ट–3),** नैदानिक अर्हताएं **(परिशिष्ट–4)** और नैदानिक अनुभव विवरण **(परिशिष्ट–5)** पर संबंधित नैदानिक संकाय/प्रीसेप्टर द्वारा हस्ताक्षर किये जाने चाहिए।

X. अध्ययन पाठ्यक्रम

1. आयुर्वेद स्पेशियलिटी नर्सिंग–I

संस्कृत का परिचय, आयुर्वेद का परिचय और आयुर्वेद नर्सिंग अभ्यास में अनुप्रयुक्त बुनियादी विज्ञान (आयुर्वेद की बुनियादी अवधारणाएं), शरीर रचना और शरीर क्रिया विज्ञानम (मूल शरीर रचना विज्ञान एवं जीवन पद्धति), निदानम (मेडिकल नर्सिंग) और मानसिक रोगी परिचारण (मनोरोग नर्सिंग), द्रव्यगुण और भैषज्य कल्पना विज्ञानम (सामान्य औषध विज्ञान और औषधीय नर्सिंग), स्वास्थवृत्त और योग (जीवन शैली) और मूलभूत पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिकः 230 घंटे और प्रायोगिकः 450 घंटे

पाठ्यक्रम विवरणः यह पाठ्यक्रम छात्रों को आयुर्वेद देखभाल प्रावधानों और आयुर्वेद उपचार चाहने वाले रोगियों के निदान और उपचार में बुनियादी विज्ञान के अनुप्रयोग और आयुर्वेद नर्सिंग अभ्यास में व्यावसायिकता की समझ, संवाद, रोगी और पारिवारिक शिक्षा, परामर्श, नैदानिक नेतृत्व एवं संसाधन प्रबंधन और साक्ष्य आधारित एवं अनुप्रयुक्त शोध के संदर्भ में समझ और गहन ज्ञान विकसित करने में मदद करने हेतु तैयार किया गया है।

इकाई	समय (घंटे)	अध्ययन के परिणाम	विषय	शिक्षण/अध्ययन गतिविधियां	नियत कार्य/ मूल्यांकन विधियां
1.	30 (टी)	संस्कृत का बुनियादी ज्ञान प्राप्त करना	**संस्कृत** क. शब्दमंजरी ख. सिद्धरूपम ग. क्रियाओं का संयोजन	▪ व्याख्यान एवं परिचर्चा	▪ कक्षा परीक्षा
2.	40 (टी)	विभिन्न रोगों से ग्रस्त रोगियों के निदान, उपचार और देखभाल में स्वास्थ्य देखभाल की आयुर्वेद प्रणाली की बुनियादी अवधारणाओं को समझना	**आयुर्वेद की मूल अवधारणा** क. आयुर्वेद की मूल अवधारणाएं – आयुर्वेद के विकास के बारे में सामान्य जागरूकता और पंचमहाभूत सिद्धांत ख. दोष, धातु, माला विज्ञानम और मानस की अवधारणा **द्रव्य** क. परिभाषा ख. गठन ग. निम्नलिखित शब्दों का वर्गीकरण और विस्तारः रस, गुण, वीर्य, विपाक, प्रभाव की उचित परिभाषा, गठन और वर्गीकरण **रोग एवं आरोग्य की अवधारणा** क. अग्नि की अवधारणा और इसका	▪ व्याख्यान एवं परिचर्चा	▪ कक्षा परीक्षा

इकाई	समय (घंटे)	अध्ययन के परिणाम	विषय	शिक्षण/अध्ययन गतिविधियां	नियत कार्य/ मूल्यांकन विधियां
			महत्व ख. प्रकृति, कोष्ट, देश, काल, औषध और औषधकला की अवधारणाएं		
3.	30 (टी)	आयुर्वेद के संदर्भ में मानव शरीर प्रणाली का वर्णन और रोगों के होने के पीछे का मूल सिद्धांत	**भाग अः शरीर रचना एवं भाग बः शरीर क्रिया विज्ञानम (मूल शरीर रचना और शरीर क्रिया विज्ञान)** **भाग अः शरीर रचना** i. शरीर उपक्रम ii. शरीर की अवधारणा एवं शरीर रचना का महत्व iii. शरीर का विकास और त्रिदोष, त्रिगुण, दोष, धातु और माला का कार्यात्मक महत्व iv. गर्भ शरीर, गर्भधारण की अवधारणाओं का अध्ययन, पोषण और संवहन v. अस्थि शरीरम vi. हड्डियों का अध्ययन – पहचान, वर्गीकरण, संरचना के साथ–साथ मांसपेशियों के जोड vii. जोड़ों के प्रकार viii. मर्म शरीरम **भाग बः शरीर क्रिया विज्ञानम** उचित परिभाषा, गठन और वर्गीकरण के साथ निम्नलिखित शारीरिक कारकों की अवधारणाः i. दोष ii. धातु iii. माला iv. स्रोत v. उपधातु vi. ओजस vii. सिराधमनी viii. इंद्रियां ix. प्रकृति x. स्नायु xi. संधि	▪ व्याख्यान एवं परिचर्चा ▪ रोगियों के मूल्यांकन का प्रदर्शन	▪ कक्षा परीक्षा ▪ प्रीसेप्टर के मार्गदर्शन में प्रत्युत्तर प्रदर्शन
4.	40 (टी) 200 (पी)	आयुर्वेद के दृष्टिकोण से परिभाषा, एटिओलॉजी, पैथोफिजियोलॉजी, संकेत और लक्षण और विभिन्न रोगों की नैदानिक उपायों की व्याख्या करना और विभिन्न रोग स्थितियों का नर्सिंग प्रबंधन	**भाग अः निदानम (मेडिकल नर्सिंग)** क. औषधियों का विकास ख. रोग एवं कारणों की अवधारणा ग. एटिओलॉजी की पहचान की परिभाषा घ. निम्नलिखित रोगों की पैथोफिज़ियोलॉजी और लक्षण विज्ञानः i. ज्वर ii. रक्तपित्त iii. कास, स्वास, हिक्का, स्वरभेद iv. राज्यक्षमा v. अग्निमांद्य vi. अजीर्ण	▪ व्याख्यान एवं परिचर्चा ▪ मामले की प्रस्तुति	▪ मामले का अध्ययन ▪ नैदानिक प्रस्तुति ▪ कक्षा परीक्षा

इकाई	समय (घंटे)	अध्ययन के परिणाम	विषय	शिक्षण/अध्ययन गतिविधियां	नियत कार्य/ मूल्यांकन विधियां
			vii. विषूचिका viii. अलस्का ix. गृहणी x. वातव्याधि xi. वातरक्त xii. आमवात xiii. हृदरोग xiv. मूत्रकृचा xv. मूत्राघात xvi. अश्मरी xvii. प्रमेह xviii. महापीडक xix. मेदोरोग xx. कुष्ठ		
			ङ. आयुर्वेदिक नैदानिक उपायों का अध्ययन i. आपतोपदेशदी ii. त्रिविधपरीक्षा iii. षडंग चतुर्विध iv. अष्टस्थान परीक्षा v. दशविधरोग परीक्षा vi. स्रोतोपरीक्षा vii. धातु, उपधातु परीक्षा		
			च. विभिन्न परिस्थितियों के लिए आयुर्वेद में प्राथमिक उपचार i. उपाशय का अध्ययन ii. अनुपाशयभेदा iii. उक्त रोग का अरिष्ट लक्षण		
			भाग बः मानसिक रोगी परिचारण (मनोरोग नर्सिंग) i. परिभाषा ii. आयुर्वेद में मन की प्रकृति iii. मन की भौतिक प्रकृति को लेकर विवाद iv. मन की दृष्टि को लेकर विवाद v. गुण vi. कर्म vii. प्रज्ञापराधा की अवधारणाएं viii. बुधि की अवधारणा ix. समृति x. लक्षण		
			राजस्तमो गुण i. उन्माद और अपस्मार ii. मादक द्रव्यों का सेवन iii. ग्रहबाधा iv. अधथ्वाबिनिवेस **मानसिक रोग क विशेष उपचार** i. औषधि ii. तालम iii. तलपोथिचिल iv. शिरोधारा v. स्नेहपान vi. विरेचन vii. शिरोवस्थी		

इकाई	समय (घंटे)	अध्ययन के परिणाम	विषय	शिक्षण/अध्ययन गतिविधियां	नियत कार्य/ मूल्यांकन विधियां
5.	30(टी) 100 (पी)	औषध विज्ञान, फार्माकोकाइनेटिक्स और फार्माकोडायनेमिक्स, विभिन्न आयुर्वेदिक फॉर्मूलरी की तैयारी, वितरण और नर्सिंग मध्यवर्तन की व्याख्या करना	**भाग अः द्रव्यगुण (सामान्य औषध विज्ञान)** i. आयुर्वेदिक औषध विज्ञान का परिचय और परिभाषा ii. रस, गुण, वीर्य, विपाक, प्रभाव iii. औषधियों का स्रोत iv. भार और माप v. औषधीय नैतिकता और सिद्धांत vi. औषधि निर्धारण प्रणाली और औषधि देने के मार्ग vii. हर्बल औषधियों की पहचान और प्रमाणीकरण **भाग बः भैषज्य कल्पना विज्ञानम (औषधीय नर्सिंग)** i. शुद्धमात्रिकी, आयुर्वेदिक औषधीय अवधारणाएं ii. औषधियों की निधानी आयु और उपयोग करने की अवधि की समाप्ति iii. रसौषधियों के प्रति जागरूकता iv. हाई अलर्ट औषधियां v. औषधीय प्रतिकूल प्रतिक्रिया vi. एक जैसी दिखने वाली औषधियां **विभिन्न कल्पनाओं के प्रति जागरूकता** i. क्वाथ ii. चूर्ण iii. अवलेह iv. आसव v. अरिष्ट vi. अर्क vii. रसौषधि viii. भस्म ix. अनुपनम x. विभिन्न बाहरी अनुप्रयोग xi. प्रशासन मार्ग का ज्ञान xii. भंडारण **नर्स की भूमिका** i. औषध प्रशासन ii. प्रणालीगत औषधीय एजेंटों से संबंधित औषधीय मध्यवर्तन में जिम्मेदारियां	▪ परिचर्चा ▪ मामले की प्रस्तुति	▪ प्रयोगशाला अनुभव ▪ औषधीय उद्यान के दौरे ▪ हर्बेरियम संग्रह ▪ औषधालय ▪ क्षेत्रीय दौरे ▪ रिपोर्ट लेखन
6.	30 (टी) 150 (पी)	विभिन्न रोगों के प्रबंधन और विशिष्ट नर्सिंग मध्यवर्तनों में जीवन शैली, आहार और योग की भूमिका के बारे में समझना	**स्वास्थ्यवृत्त और योग** i. स्वास्थवृत परिचय ii. अथुराव्रुथा परिचय iii. दिनचर्या iv. रितुचर्या v. सदवृतम vi. जनपदोध्वमसनीयम vii. अन्नपानविधि viii. अन्नसंरक्षणीयम ix. मातृस्थीयम x. शतपथ्यद्रव्य	▪ व्याख्यान एवं परिचर्चा	▪ योग का प्रदर्शन ▪ स्वास्थ्य वार्ता ▪ विभिन्न परिस्थितियों/ आयु वर्गों के लिए आहार चार्ट तैयार करना

इकाई	समय (घंटे)	अध्ययन के परिणाम	विषय	शिक्षण/अध्ययन गतिविधियां	नियत कार्य/ मूल्यांकन विधियां
			xi. रोगानुलपाधनीय और उसका विवरण xii. त्रयोपस्तंब xiii. रोग और आरोग्य xiv. पनाथ्याय xv. पनजीर्ण xvi. परमदा xvii. चिकित्सा परिचय		
			आहार विद्या i. परिचय ii. सदापथ्य आहार का महत्व iii. भोजन विधि iv. भोजन कला v. विभिन्न स्थितियों में आहार vi. शिशु पोषण		
			योग i. परिचय ii. योग का महत्व iii. योग और शरीर क्रिया विज्ञान और विभिन्न प्रकार के योगासनों का अध्ययन iv. विभिन्न प्रकार के रोगों में योग	▪ योग सत्र	▪ योग का प्रत्युत्तर प्रदर्शन
			स्वास्थ्य लाभ नर्सिंग i. जराचिकित्सा नर्सिंग की अवधारणा ii. उपशामक देखभाल नर्सिंग iii. रसायन और वाचिकरण चिकित्सा	▪ व्याख्यान एवं परिचर्चा	▪ स्वास्थ्य वार्ता ▪ स्वास्थ्य आंकलन
			औषधियों की अन्य वैकल्पिक प्रणालियां i. यूनानी ii. सिद्ध iii. होम्योपैथी	▪ रोगी का आंकलन	▪ अवलोकन रिपोर्ट
7.	30 (टी)	व्यावसायिकता की समझ का प्रदर्शन और आयुर्वेद नर्सिंग अभ्यास में व्यावसायिकता प्रकट करना आयुर्वेद नर्सिंग के चिकित्सा–विधिक पहलुओं का वर्णन करना	**<u>व्यवसायिकता</u>** **व्यवसायिकता** i. अर्थ और सिद्धांत – आयुर्वेद नर्सिंग अभ्यास में जवाबदेही, ज्ञान, दृश्यता और नैतिकता ii. व्यावसायिक मूल्य और दक्ष्य व्यवहार iii. आईएनसी आचार संहिता, व्यवसायिक आचरण संहिता और अभ्यास मानक iv. आयुर्वेद नर्सिंग से संबंधित नैतिक मुद्दे v. नर्स–नर्स व्यवसायी की भूमिका का विस्तार vi. व्यावसायिक संगठन vii. सतत नर्सिंग शिक्षा **चिकित्सा–विधिक मुद्दे** i. आयुर्वेद नर्सिंग से संबंधित विधान और विनियम ii. उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम	▪ व्याख्यान एवं परिचर्चा	▪ कक्षा परीक्षा

इकाई	समय (घंटे)	अध्ययन के परिणाम	विषय	शिक्षण/अध्ययन गतिविधियां	नियत कार्य/ मूल्यांकन विधियां
			iii. उपेक्षा और कदाचार iv. चिकित्सा–विधिक पहलू v. रिकॉर्ड और रिपोर्ट vi. आयुर्वेद विशेषज्ञ नर्सों के कानूनी दायित्व		
		रोगियों, परिजनों और व्यावसायिक सहयोगियों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद स्थापित करना, स्वास्थ्य परिणामों को बढ़ाने के लिए आपसी सम्मान और साझा निर्णय लेने को बढ़ावा देना	**संवाद** i. संवाद के माध्यम और तकनीक ii. सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील संवाद iii. नर्सिंग देखभाल योजनाओं का विकास और रिकॉर्ड iv. संवाद के समर्थन में सूचना प्रौद्योगिकी उपकरण v. दलीय संवाद	▪ व्याख्यान ▪ दुःखद सूचना देना – भूमिका निर्वहन ▪ सामूहिक चर्चा	▪ भूमिका निर्वहन/स्किट
		उपचार और देखभाल में प्रभावी रूप से भाग लेने हेतु रोगियों और परिजनों को शिक्षित करना और परामर्श देना	**रोगी एवं पारिवारिक शिक्षा** i. शिक्षण और अध्ययन के सिद्धान्त ii. स्वास्थ्य शिक्षा के सिद्धान्त iii. सूचनात्मक जरूरतों और रोगी की शिक्षा का आंकलन iv. रोगी शिक्षा सामग्री का विकास	▪ समकक्ष प्रशिक्षण	▪ प्रासंगिक विषय पर सामूहिक स्वास्थ्य शिक्षा का संचालन करना
			परामर्श i. परामर्श तकनीक ii. दुःखद सूचना देते समय, गहन उपचार, संकटकालीन मध्यवर्तन और मरणासन्न अवस्था में रोगी और परिजनों को परामर्श देना	▪ परामर्श सत्र	▪ परामर्श पर भूमिका निर्वहन
		▪ नैदानिक नेतृत्व और संसाधन प्रबंधन रणनीतियों की समझ प्रदर्शित करना और आयुर्वेदिक देखभाल और समायोजन में उनका उपयोग करना ▪ सहयोगी और प्रभावी दलीय कार्य को बढ़ावा देना	**नैदानिक नेतृत्व और संसाधन प्रबंधन** i. नेतृत्व और प्रबंधन ii. आयुर्वेद नर्सिंग देखभाल प्रबंधन के सिद्धांत – योजना बनाना, आयोजन करना, स्टाफ, रिपोर्टिंग, रिकॉर्डिंग और बजट तैयार करना iii. नैदानिक नेतृत्व और इसकी चुनौतियां iv. शिष्ट मंडल v. आयुर्वेदिक इकाइयों में मानव संसाधन प्रबंधन vi. सामग्री प्रबंधन vii. दलीय प्रबंधन और अंतःविषयक दल के सदस्य के रूप में काम करना viii. आयुर्वेदिक रोगियों की देखभाल के लिए नीतियों को प्रासंगिक बनाने में भागीदारी करना	▪ व्याख्यान एवं परिचर्चा	▪ आदर्श आयुर्वेदिक विभाग में कार्यरत कनिष्ठ नर्सिंग अधिकारियों/ स्टाफ नर्सों के लिए ड्यूटी रोस्टर तैयार करना
		आयुर्वेद वार्ड के लिए इकाई तैयार करना	i. आयुर्वेद वार्डों के लेआउट का विवरण	▪ प्रस्तुति ▪ परिचर्चा	▪ एक आदर्श आयुर्वेद वार्ड का अभिन्यास तैयार करना

इकाई	समय (घंटे)	अध्ययन के परिणाम	विषय	शिक्षण/अध्ययन गतिविधियां	नियत कार्य/ मूल्यांकन विधियां
		नैदानिक परीक्षण आयोजित करना और गुणवत्ता आश्वासन गतिविधियों में भाग लेना	**आयुर्वेद इकाई में गुणवत्ता आश्वासन कार्यक्रम** i. नर्सिंग परीक्षण ii. प्रमुख प्रदर्शन संकेतक (केपीआई) iii. गुणवत्ता आश्वासन – एनएबीएच	▪ मॉड्यूल – प्रमाणन	▪ नर्सिंग परीक्षण आयोजित करना और प्रमुख प्रदर्शन संकेतक तैयार करना (केपीआई)
		▪ शोध प्रक्रिया का वर्णन करना और मूल सांख्यिकीय परीक्षण करना ▪ शोध के सिद्धांतों और चरणों का उपयोग करके शोध परियोजना संपादित करना ▪ साक्ष्य आधारित/ व्यावसायिक अभ्यास की सर्वोत्तम कार्य प्रणालियों को अपनाना	**साक्ष्य आधारित एवं अनुप्रयुक्त शोध का अनुप्रयोग** i. नर्सिंग शोध प्रक्रिया का परिचय ii. आंकडों की प्रस्तुति, बुनियादी सांख्यिकीय परीक्षण और इसके अनुप्रयोग iii. आयुर्वेद नर्सिंग अभ्यास में शोध प्राथमिकताएं iv. आयुर्वेद नर्सिंग अभ्यास की प्रासंगिक समस्याओं/प्रश्नों का निरूपण v. आयुर्वेद नर्सिंग अभ्यास में साक्ष्य आधारित/सर्वोत्तम प्रथाओं की पहचान करने के लिए साहित्यक समीक्षा vi. दैनिक व्यावसायिक अभ्यास में साक्ष्य–आधारित मध्यवर्तन का कार्यान्वयन vii. शोध में नैतिकता	▪ व्याख्यान ▪ अभ्यासः वैज्ञानिक प्रपत्र लेखन ▪ सामूहिक शोध परियोजना	▪ आयुर्वेद विभाग के गत पांच वर्ष के सांख्यिकीय आंकड़े तैयार करना ▪ आयुर्वेद नर्सिंग मध्यवर्तन पर साहित्यिक समीक्षा का संचालन करना/ सामूहिक शोध परियोजना रिपोर्ट
8.	30 (टी) 200 (पी)	वयस्क एवं शिशु रोगियों तथा विभिन्न रोग स्थितियों के नर्सिंग प्रबंधन के लिए शल्य विभाग की विभिन्न प्रक्रियाओं में सहायता और प्रदर्शन करने में कौशल विकसित करना	**भाग अः शल्यकर्म परिचारण (सर्जिकल नर्सिंग)** **परिचय** i. परिभाषा ii. सुश्रुत प्रधान्य iii. व्याधि प्रधान्य iv. साध्य आसाध्य व्याधि प्रकरम **विभिन्न परिस्थितियां और इनके प्रबंधन** **वरुण** i. परिभाषा ii. एटिओलॉजी iii. पैथोफिजियोलॉजी iv. प्रकार v. लक्षण vi. जटिलताएं vii. व्रण उपक्रम viii. सप्त उपक्रम ix. षष्ठी उपक्रम **एटिओलॉजी, पैथोफिजियोलॉजी, विभिन्न रोगों के लक्षण** i. नाडी वृण ii. अर्श iii. रक्त स्राव	▪ व्याख्यान एवं परिचर्चा ▪ विभिन्न शल्य प्रक्रियाओं में सहायता करना ▪ विभिन्न प्रक्रियाओं का अवलोकन	▪ मामले का अध्ययन ▪ नैदानिक प्रस्तुति ▪ प्रीसेप्टर के मार्गदर्शन और पर्यवेक्षण के तहत विभिन्न प्रक्रियाओं का प्रदर्शन/ उनमें सहायता करना ▪ कक्षा परीक्षा

इकाई	समय (घंटे)	अध्ययन के परिणाम	विषय	शिक्षण/अध्ययन गतिविधियां	नियत कार्य/ मूल्यांकन विधियां
			iv. विदराधि v. जलना vi. परिनामसूल vii. क्षुद्ररोग viii. ग्रन्थि ix. अपच x. अर्बुधा xi. विभिन्न जहरीले जंतुओं, कीड़ों और सांप के काटने पर प्राथमिक उपचार		
			भाग बः शल्यकर्म परिचारण **1. यंत्र विधि** **2. शास्त्र कर्म – प्रक्रियाएं और प्रबंधन** i. उपासय का अध्ययन ii. अनुपासय iii. शास्त्रकर्म का अध्ययन iv. पूर्व और पश्चात कर्म v. अष्टविद्या कर्म vi. व्रण शोधन vii. रोपण द्रव्य viii. रक्तमोक्षणम् ix. सिरावेधा x. प्रचन्ना xi. जलौकवचरणम xii. क्षारकर्म xiii. अग्निकर्म xiv. लेपन विधि xv. आहार विधि		
			3. पट्टी करना (बंधन विधि) i. अस्थिभंग के लिए विभिन्न प्रकार के बंधों के आयुर्वेदिक वर्णन का अध्ययन ii. स्थिरीकरण के तरीके		
			4. उपचार, शल्य चिकित्सीय पथ्य		
			5. निम्नलिखित प्रक्रियाओं के उपकरण i. शास्त्र कर्म ii. क्षार कर्म iii. अग्नि कर्म iv. रक्तमोक्षणम्		
9.	30 (टी) 200 (पी)	आयुर्वेद के परिप्रेक्ष्य में नेत्र एवं ईएनटी को प्रभावित करने वाले विभिन्न रोगों के कारण, पैथोफिजियोलॉजी, संकेत व लक्षण, उपचार के तौर–तरीके और विभिन्न रोग स्थितियों के नर्सिंग प्रबंधन की व्याख्या करना	**शालक्य कर्म परिचारण (ईएनटी और नेत्र विज्ञान नर्सिंग)** **परिचय** i. रोग की जानकारी ii. हेथु, संप्रथी iii. लक्षण iv. भेद v. अनुबंध उपचार	▪ व्याख्यान ▪ प्रस्तुति ▪ परिचर्चा ▪ सामूहिक प्रस्तुति	▪ मामले का अध्ययन ▪ नैदानिक प्रस्तुति ▪ प्रीसेप्टर के मार्गदर्शन और पर्यवेक्षण के तहत विभिन्न प्रक्रियाओं का प्रदर्शन/उनमें
			विभिन्न परिस्थितियां		

इकाई	समय (घंटे)	अध्ययन के परिणाम	विषय	शिक्षण/अध्ययन गतिविधियां	नियत कार्य/ मूल्यांकन विधियां
			एवं प्रबंधन i. नेत्र रोग ii. शिर रोग iii. कर्ण रोग iv. नासिका रोग v. मुख रोग		सहायता करना ▪ कक्षा परीक्षा
			प्रक्रियाएं i. कर्ण पुराण ii. धूम पान iii. जलौकवचरणम iv. क्रिया क्रम क. कवल ख. गणदोष ग. शिरोवस्ति घ. नास्य ङ. अंजन च. तर्पण छ. पुतपाक ज. पिंडी झ. विदालक ञ. मूर्ध तेल ट. मुख लेप		
10.	30 (टी) 145 (पी)	आयुर्वेद के परिप्रेक्ष्य में शिशुओं को प्रभावित करने वाले विभिन्न विकारों के कारण, पैथोफिजियोलॉजी, संकेत व लक्षण, उपचार के तौर–तरीके और विभिन्न रोग स्थितियों के नर्सिंग प्रबंधन की व्याख्या करना	**शिशु परिचारण (शिशु चिकित्सा नर्सिंग)** i. परिचय ii. परिभाषा iii. प्रकार iv. विस्तृत शिशु–उपचरण v. शिशु–रोगोपचार vi. बालामायाप्रतिक्षेधा और संबंधित उपचार कर्म vii. विसर्प चिकित्सा उपचार viii. फक्क रोग चिकित्सा और इसके उपचार ix. दंथोभेदजन्य रोग चिकित्सा उपचार	▪ व्याख्यान एवं परिचर्चा ▪ स्वास्थ्य आंकलन ▪ प्रस्तुति ▪ मामले की प्रस्तुति	▪ मामले का अध्ययन ▪ नैदानिक प्रस्तुति ▪ कक्षा परीक्षा
11.	30 (टी) 200 (पी)	आयुर्वेद के परिप्रेक्ष्य में महिलाओं को प्रभावित करने वाले विभिन्न प्रसूति एवं स्त्री रोग संबंधी विकारों के कारण, पैथोफिजियोलॉजी, संकेत व लक्षण, उपचार के तौर–तरीके और विभिन्न रोग स्थितियों के नर्सिंग प्रबंधन की व्याख्या करना	**स्त्री रोग एवं प्रसूति तंत्र परिचारण (स्त्री रोग एव प्रसूति नर्सिंग)** i. परिभाषा ii. प्रजनन शरीर विज्ञान iii. गर्भिणी विज्ञानम् iv. पुंसावन उपचारण v. गर्भिणी परिचर्या vi. गर्भव्यापथ vii. योनि व्यापथ और इसकी नर्सिंग देखभाल viii. सूतीकोपचारणम् ix. सूथिका विज्ञानम् x. स्त्री रोग चिकित्सा उपचारणम् **स्त्री रोग प्रक्रिया** i. पिचु ii. उत्तरा वस्थि iii. प्रक्षालनम	▪ व्याख्यान एवं परिचर्चा ▪ प्रस्तुति	▪ मामले का अध्ययन रिपोर्ट ▪ नैदानिक प्रस्तुति ▪ प्रत्युत्तर प्रदर्शन ▪ कक्षा परीक्षा
12.	50 (टी)	विभिन्न पंचकर्म प्रक्रियाओं की	**भाग अः पंचकर्म**	▪ व्याख्यान एवं	▪ विभिन्न पंचकर्म

इकाई	समय (घंटे)	अध्ययन के परिणाम	विषय	शिक्षण/अध्ययन गतिविधियां	नियत कार्य/ मूल्यांकन विधियां
	335 (पी)	नर्सिंग देखभाल में कौशल को समझाना और प्रस्तुत करना	**स्नेहपान विधि** i. स्नेह के प्रकार ii. गुण iii. स्नेह के स्रोत iv. स्नेहपान के दौरान पूर्व और बाद के मापन आहार के साथ स्नेहन की प्रक्रिया v. प्रशासन का समय vi. खुराक, सद्या स्नेह vii. सम्यक स्निग्धा लक्षण viii. स्नेहव्यापथ और उसके उपचार ix. संसर्जन कर्म **स्वेदना विधि** i. परिभाषा ii. गुण, प्रकार और विस्तृत प्रक्रियाएं iii. लक्षण और अंतर्विरोध iv. आग्नेय और अनाग्नेय स्वेदना विधि v. सम्यक स्वेद लक्षण vi. पूर्व और बाद के उपाय vii. स्वेदना के प्रभाव **वामन विधि** i. परिभाषा ii. गुण, प्रकार और विस्तृत प्रक्रियाएं iii. लक्षण और अंतर्विरोध iv. पूर्व और बाद के उपाय v. सम्यक और असम्यक वमन के लक्षण vi. उपचार vii. संसर्जन कर्म **विरेचन विधि** i. परिभाषा ii. गुण, प्रकार और विस्तृत प्रक्रियाएं iii. लक्षण और अंतर्विरोध iv. पूर्व और बाद के उपाय v. सम्यक और असम्यक विरेचन के लक्षण vi. सोधनाफल vii. संसर्जन कर्म **वस्ति विधि** i. परिभाषा ii. गुण, प्रकार और विस्तृत प्रक्रियाएं iii. लक्षण और अंतर्विरोध iv. पूर्व और बाद के उपाय v. वस्ति द्रव्य की तैयारी vi. वस्ति यंत्र का वर्णन	परिचर्चा ▪ मामले पर चर्चा ▪ पंचकर्म पूर्व, पंचकर्म के दौरान और पंचकर्म के पश्चात देखभाल की एसओपी तैयार करना ▪ संस्थागत दौरा ▪ रिपोर्ट लेखन	प्रक्रियाओं का प्रत्युत्तर प्रदर्शन ▪ विभिन्न प्रक्रियाओंके लिए एसओपी तैयार करना और उनकी प्रस्तुति ▪ कक्षा परीक्षा

इकाई	समय (घंटे)	अध्ययन के परिणाम	विषय	शिक्षण/अध्ययन गतिविधियां	नियत कार्य/ मूल्यांकन विधियां
			vii. प्रशासन का समय viii. वस्ति की शुद्धमात्रिकी ix. सम्यक और असम्यक लक्षण		
			नास्य विधि i. परिभाषा ii. गुण, प्रकार और विस्तृत प्रक्रियाएं iii. लक्षण और अंतर्विरोध iv. पूर्व और बाद के उपाय v. प्रशासन का समय vi. चिकित्सीय खुराक vii. सम्यक और असम्यक लक्षण		
			भाग बः पंचकर्म **पारंपरिक आयुर्वेदिक उपचार** i. पिज्हिचिल ii. उज्हिचिल iii. सभी प्रकार के पिंड स्वेद iv. अन्नलेपन v. शिरोधरा vi. तकराधरा vii. थालम viii. सभी प्रकार के कायासेक		

2. **आयुर्वेद स्पेशियलिटी नर्सिंग–II**

आयुर्वेद अस्पतालों में भर्ती रोगियों की नैदानिक स्थितियों का नर्सिंग प्रबंधन जिसमें आंकलन, निदान, उपचार और विशेष मध्यवर्तन शामिल हैं आर इसके विशेष विषयों में शल्य कर्म परिचारण (सर्जिकल नर्सिंग), शालक्य कर्म परिचारण (ईएनटी और नेत्र विज्ञान), शिशु परिचारण (शिशु चिकित्सा नर्सिंग), स्त्री रोग एवं प्रसूति तंत्र परिचारण (स्त्री रोग एवं प्रसूति) एवं पंचकर्म शामिल हैं।

सैद्धान्तिकः 170 घंटे और प्रायोगिकः 1080 घंटे

पाठ्यक्रम विवरणः यह पाठ्यक्रम छात्रों को आयुर्वेद अस्पताल में भर्ती विभिन्न विकारों वाले रोगियों के आंकलन, निदान, उपचार, नर्सिंग प्रबंधन और सहायक देखभाल हेतु आवश्यक ज्ञान और दक्षता विकसित करने में मदद करने के लिए तैयार किया गया है।

XI. अभ्यास (कौशल प्रयागशाला और नैदानिक)

कुल घंटेः 1570 (40 + 1530)

अभ्यास दक्षताएंः

कार्यक्रम के अंत में छात्र निम्नलिखित प्रक्रियाओं के सम्पादन में सक्षम होंगेः

1. आयुर्वेद अस्पताल समायोजन में भर्ती रोगियों का आंकलन करना।
2. आयुर्वेद समायोजन में विशेष प्रक्रियाएं संपादित करना और सहायता करना।
3. विभिन्न पंचकर्म और क्रियाकल्प प्रक्रियाओं से गुजरने वाले रोगियों को तैयार करना और उनकी देखभाल करना।
4. प्रोटोकॉल के अनुसार विभिन्न प्रकार की आयुर्वेदिक फॉर्मूलरी प्रशासित करना।
5. आयुर्वेद समायोजन में विभिन्न सर्जिकल, पैरा सर्जिकल और स्त्री रोग संबंधी प्रक्रियाओं से गुजरने वाले रोगियों को तैयार करना और उनकी देखभाल करना।
6. विभिन्न विकारों के साथ आयुर्वेद समायोजन में भर्ती शिशु चिकित्सा और जराचिकित्सा रोगियों जैसे विशेष समूहों का आंकलन और प्रबंधन करना।
7. औषधियों का रखरखाव तथा भंडारण और दैनिक रिकॉर्ड रखना।
8. रोगी शिक्षा कार्यक्रम का संचालन करना।

1. नैदानिक पदस्थापन

क्र.सं.	क्षेत्र	अवधि (सप्ताह)	नैदानिक अध्ययन परिणाम	कौशल / प्रक्रियात्मक दक्षताएं	कार्य	आंकलन विधि
1	बाह्य रोगी विभाग	2	▪ विभिन्न रोगों से ग्रस्त रोगियों की जांच में सहायता करना ▪ नैदानिक प्रक्रियाओं में सहायता करना	▪ इतिवृत्त लेना ▪ शारीरिक परीक्षण ▪ स्वास्थ्य शिक्षा ▪ विभिन्न ओपीडी आधारित प्रक्रियाओं में सहायता करना	▪ स्वास्थ्य आंकलन रिपोर्ट ▪ इतिवृत्त लेना और शारीरिक परीक्षण	▪ अवलोकन रिपोर्ट
2	एकीकृत ओपीडी (यूनानी, सिद्ध और होम्योपेथी)	1	▪ विभिन्न रोगों से ग्रस्त रोगियों की जांच में सहायता करना ▪ नैदानिक प्रक्रियाओं में सहायता करना	▪ इतिवृत्त लेना ▪ शारीरिक परीक्षण ▪ स्वास्थ्य शिक्षा ▪ विभिन्न ओपीडी आधारित प्रक्रियाओं में सहायता करना	▪ स्वास्थ्य आंकलन रिपोर्ट ▪ इतिवृत्त लेना और शारीरिक परीक्षण	▪ अवलोकन रिपोर्ट
3	अंतःरोगी विभाग	12	▪ आयुर्वेद समायोजन में विभिन्न विकारों से ग्रसित रोगियों के लिए नर्सिंग देखभाल प्रदान करना	▪ इतिवृत्त लेना ▪ रोगियों का शारीरिक परीक्षण ▪ नैदानिक परीक्षणों में सहायता करना ▪ विभिन्न पंचकर्म, क्रियाकल्प, शल्य और स्त्री रोग संबंधी प्रक्रियाओं के लिए रोगियों को तैयार करना ▪ संक्रमण नियंत्रण अभ्यास ▪ रोगियों की पूर्व, दौरान और बाद में प्रक्रियात्मक देखभाल ▪ विभिन्न आयुर्वेदिक फॉर्मूलरी का प्रशासन ▪ आहार योजना और जीवन शैली में संशोधन ▪ रोगियों और उनके परिजनों को परामर्श देना	▪ स्वास्थ्य आंकलन रिपोर्ट ▪ मामले की अध्ययन रिपोर्ट ▪ स्वास्थ्य वार्ता ▪ रोगियों और परिजनों को परामर्श देना	▪ नैदानिक मूल्यांकन ▪ मामले की अध्ययन रिपोर्ट
4	पंचकर्म थियेटर	9	▪ विभिन्न पंचकर्म प्रक्रियाओं के लिए रोगी को तैयार करना ▪ विभिन्न पंचकर्म प्रक्रियाएं करना ▪ प्रक्रिया के पश्चात रोगियों की देखभाल करना	▪ पंचकर्म प्रक्रियाओं से गुजर रहे रोगियों की प्रक्रिया से पहले और बाद की देखभाल करना ▪ रोगियों और परिजनों को परामर्श देना ▪ स्वास्थ्य शिक्षा और घर पर देखभाल ▪ विभिन्न पंचकर्म प्रक्रियाएं करना ▪ किसी भी दुष्प्रभाव और परिणाम के लिए रोगियों की निगरानी करना	▪ लॉगबुक रिपोर्ट नैदानिक मूल्यांकन	▪ लॉगबुक रिपोर्ट नैदानिक मूल्यांकन

क्र.सं.	क्षेत्र	अवधि (सप्ताह)	नैदानिक अध्ययन परिणाम	कौशल / प्रक्रियात्मक दक्षताएं	कार्य	आंकलन विधि
5	क्रियाकल्प थियेटर	4	▪ विभिन्न क्रियाकल्प प्रक्रियाओं के लिए रोगी को तैयार करना ▪ विभिन्न क्रियाकल्प प्रक्रियाएं करना ▪ रोगियों की प्रक्रिया के बाद देखभाल करना	▪ क्रियाकल्प प्रक्रियाओं से गुजर रहे रोगियों की प्रक्रिया से पहले और बाद की देखभाल करना ▪ रोगियों और परिजनों को परामर्श देना ▪ स्वास्थ्य शिक्षा और घर पर देखभाल ▪ नेत्र और ईएनटी के लिए विभिन्न प्रक्रियाएं करना ▪ किसी भी दुष्प्रभाव और परिणाम के लिए रोगियों की निगरानी करना	▪ लॉगबुक रिपोर्ट	▪ नैदानिक मूल्यांकन
6	शल्य चिकित्सा कक्ष और आईसीयू	2	▪ आयुर्वेद समायोजन में विभिन्न शल्य और परा–शल्य प्रक्रियाओं में सहायता करना ▪ किसी भी शल्य प्रक्रिया से गुजर रहे रोगियों के लिए प्रक्रिया से पहले और बाद की देखभाल करना ▪ आपातकालीन कौशल प्रबंधन	▪ शल्य चिकित्सा के दौर से गुजर रहे रोगियों के लिए प्रक्रिया से पहले और बाद की देखभाल करना ▪ विभिन्न शल्य प्रक्रियाओं में सहायता करना ▪ शल्य चिकित्सा में इस्तेमाल होने वाले विभिन्न उपकरणों की पहचान करना ▪ आपातकालीन प्रबंधन में कौशल हासिल करना	▪ लॉगबुक रिपोर्ट	▪ नैदानिक मूल्यांकन
7	प्रसव कक्ष (एसआरपीटी)	2	▪ प्रसव कक्ष में विभिन्न प्रक्रियाओं में सहायता करना ▪ किसी भी प्रक्रिया से गुजर रहे रोगियों के लिए प्रक्रिया से पहले और बाद की देखभाल करना	▪ प्रसव प्रक्रिया से गुजर रहे रोगियों के लिए प्रक्रिया से पहले और बाद की देखभाल करना ▪ विभिन्न स्त्री रोग प्रक्रियाओं में सहायता करना ▪ प्रसव कक्ष में इस्तेमाल होने वाले विभिन्न उपकरणों की पहचान करना ▪ प्रसव कक्ष में नवजात की देखभाल करना	▪ लॉगबुक रिपोर्ट	▪ नैदानिक मूल्यांकन
8	औषधालय	2	▪ विभिन्न आयुर्वेदिक फॉर्मूलरी तैयार करने का निरीक्षण करना ▪ औषधियों और हाई अलर्ट औषधियों की तैयारी के लिए उपयोग किए जाने	▪ औषधिओं की स्टॉक प्रविष्टि और सूची प्रबंधन करना	▪ औषधि पुस्तक	▪ औषधि प्रस्तुति

क्र.सं.	क्षेत्र	अवधि (सप्ताह)	नैदानिक अध्ययन परिणाम	कौशल / प्रक्रियात्मक दक्षताएं	कार्य	आंकलन विधि
			वाले विभिन्न कच्चे माल को समझना ▪ औषधि की दुकान के स्टॉक का रखरखाव करना और माल सूची बनाना			
9	प्रयोगशाला विभाग	1	▪ आयुर्वेदिक फॉर्मूलरी की गुणवत्ता जांच के लिए विभिन्न प्रयोगशाला प्रयोगों को समझना	▪ विभिन्न प्रयोगशाला प्रयोगों में सहायता करना	▪ पोस्टिंग की रिपोर्ट	
10	अस्पताल प्रशासन	1	▪ प्रशासन प्रबंधन का मूल ज्ञान	▪ रोस्टर तैयार करने में सहायता करना ▪ माल सूची प्रबंधन	▪ विभाग का ड्यूटी रोस्टर तैयार करना	
11	योग विभाग एवं स्वास्थ्यवृत ओपीडी	2	▪ आसन और योगाभ्यासों के बारे में मूल ज्ञान प्राप्त करना ▪ विभिन्न जीवन शैलियों में कौशल	▪ विभिन्न आसनों और योगाभ्यासों को करने और प्रदर्शित करने का अभ्यास और कौशल हासिल करना ▪ दिनचर्या और ऋतुचर्या के अनुसार विभिन्न जीवन शैलियों में कौशल प्राप्त करना	▪ पोस्टिंग की रिपोर्ट	
12	नैदानिक पैथोलॉजी प्रयोगशाला	1	▪ विभिन्न नैदानिक प्रक्रियाओं में सहायता करना	▪ विभिन्न जांचों के लिए नमूने एकत्र करना ▪ जांच के परिणामों की व्याख्या करना	▪ पोस्टिंग की रिपोर्ट	
13	पैरा–सर्जिकल और प्लास्टर कक्ष	1	▪ क्षार कर्म, क्षार सूत्र, अग्निकर्म, रक्तमोक्षण, जलौकवचरणम, सिरव्याधन आदि जैसी विभिन्न पैरा–सर्जिकल तकनीकों में सहायता करना ▪ विभिन्न बंधों और स्थिरीकरण विधियों में सहायता करना	▪ विभिन्न उपकरणों की पहचान करना ▪ शल्य–चिकित्सक की सहायता करना	▪ लॉगबुक रिपोर्ट	
14	चिकित्सा शिविर	1	▪ विभिन्न रोगों के रोगियों की जांच में सहायता करना	▪ चिकित्सा शिविर के आयोजन और समन्वय में कौशल प्राप्त करना	▪ पोस्टिंग की रिपोर्ट	

परिशिष्ट–1

कौशल प्रयोगशाला विवरण

क्र.सं.	विभाग / थियेटर	उपकरण
1	शल्य तंत्र (शल्य चिकित्सा)	सामान्य शल्यचिकित्सीय और परा–शल्यचिकित्सीय उपकरण
2	पंचकर्म	द्रोणि, नाडी स्वेदन, बाष्प स्वेदन, शिरोधरा, वामन चेयर
3	स्त्री रोग एवं प्रसूति तंत्र (ओबीजी एवं प्रसूति शास्त्र)	द्रोणि, नाडी स्वेदन, बाष्प स्वेदन, शिरोधरा, लिथोटॉमी टेबल

4	कुमारभृत्य (शिशु रोग)	द्रोणि, नाडी स्वेदन, बाष्प स्वेदन, शिरोधरा
5	शालक्य तंत्र (नेत्र और ईएनटी)	द्रोणि, नाडी स्वेदन, बाष्प स्वेदन, शिरोधरा
6	भैषज्य कल्पना (औषध शास्त्र)	

परिशिष्ट–2

मूल्यांकन दिशानिर्देश (सैद्धांतिक और प्रायोगिक)

I. सैद्धान्तिक

क. आंतरिक

आयुर्वेद स्पेशियलिटी नर्सिंग (I और II): कुल 25 अंक

- प्रश्न–पत्र और प्रश्नोत्तरी: 10 अंक
- लिखित कार्य: 10 अंक
- सामूहिक परियोजना: 5 अंक

ख. बाह्य

आयुर्वेद स्पेशियलिटी नर्सिंग (I और II): कुल 75 अंक

- **भाग–I: 35 अंक** (निबंध 1 × 15 अंक= 15 अंक, लघु उत्तर 4 × 4 अंक = 16 अंक, अति लघु उत्तर 2 × 2 अंक = 4 अंक)
- **भाग–II: 40 अंक** (निबंध 1 × 15 अंक = 15 अंक, लघु उत्तर 5 × 4 अंक = 20 अंक, अति लघु उत्तर 5 × 1 अंक = 5 अंक)

II. प्रायोगिक

क. आंतरिक (75 अंक)

- **प्रायोगिक: 75 अंक**
  - कं) प्रायोगिक कार्य – 30 अंक (नैदानिक प्रस्तुति और मामले की अध्ययन रिपोर्ट – 15, औषधीय अध्ययन रिपोर्ट – 5, स्वास्थ्य वार्ता – 10)
  - ख) प्रक्रियात्मक दक्षताओं और नैदानिक आवश्यकताओं को पूरा करना: 10 अंक
  - ग) नैदानिक प्रदर्शन का निरंतर नैदानिक मूल्यांकन: 10 अंक
  - घ) अंतिम अवलोकनित अभ्यास (नैदानिक कार्य में वास्तविक प्रदर्शन): 25 अंक

ख. बाह्य (150 अंक)

अवलोकनित प्रायोगिक: 150 अंक

परिशिष्ट–3

आयुर्वेद नर्सिंग में पोस्ट बेसिक डिप्लोमा – आवासीय कार्यक्रम के लिए नैदानिक लॉग बुक

(विशिष्ट कार्यविधिक दक्षताएं/नैदानिक कौशल)

	विशिष्ट दक्षताएं/ कौशल	संपादित/ सहायता प्रदान/ अवलोकन किये गए (पी, ए, ओ)	संपादित		सहायता प्रदान		अवलोकन किये गए		संकाय/ प्रीसेप्ट के हस्ताक्षर एवं दिनांक
			संख्या	हस्ताक्षर	संख्या	हस्ताक्षर	संख्या	हस्ताक्षर	
क	**पंचकर्म प्रक्रियाएं (वयस्क एवं शिशु रोग)**								
1	**स्नेहन प्रक्रियाएं**								
1.1	स्थानिक अभ्यंग	पी, ए, ओ							
1.2	सर्वांग अभ्यंग	पी, ए, ओ							
1.3	स्थानिक पिचु	पी, ए, ओ							
2	**स्वेदना प्रक्रियाएं**								
2.1	स्थानिक वस्थी (जनु वस्थी, कडी वस्थी, ग्रीवा वस्थी, पृष्ट वस्थी,	पी, ए, ओ							

	विशिष्ट दक्षताएं/कौशल	संपादित/सहायता प्रदान/अवलोकन किये गए (पी, ए, ओ)	संपादित		सहायता प्रदान		अवलोकन किये गए		संकाय/प्रीसेप्ट के हस्ताक्षर एवं दिनांक
			संख्या	हस्ताक्षर	संख्या	हस्ताक्षर	संख्या	हस्ताक्षर	
	उरो वस्थी)								
2.2	स्थानिक परिशेक	पी, ए, ओ							
2.3	उपंह स्वेद	पी, ए, ओ							
2.4	एकांग नाड़ी स्वेद	ए, ओ							
2.5	सर्वांग नाड़ी स्वेद	ए, ओ							
2.6	पात्र पिंड स्वेद	पी, ए, ओ							
2.7	स्थानिक पी.पी.एस	पी, ए, ओ							
2.8	सर्वांग जम्बीरा पिंड स्वेद	पी, ए, ओ							
2.9	स्थानिक जे.पी.एस	पी, ए, ओ							
2.10	शष्टिका शाली पिंड स्वेद (एसएसपीएस)	पी, ए, ओ							
2.11	शिरोधरा								
2.12	शिरो वस्थी	पी, ए, ओ							
2.13	सलवन स्वेद	पी, ए, ओ							
2.14	बाष्प स्वेद	ए, ओ							
3	**रुक्षण प्रक्रियाएं**								
3.1	उदवर्तन	पी, ए, ओ							
3.2	सर्वांग वालुक स्वेद	पी, ए, ओ							
3.3	सर्वांग रूक्षण पिंड स्वेद	पी, ए, ओ							
3.4	चूर्ण पिंड स्वेद	पी, ए, ओ							
3.5	धन्यामला धरा	पी, ए, ओ							
3.6	मात्र वस्थी	पी, ए, ओ							
ख	**क्रिया कल्प प्रक्रियाएं**								
1	नेत्र सेक	पी, ए, ओ							
2	अस्चोथन	पी, ए, ओ							
3	तर्पण	पी, ए, ओ							
4	अंजन	पी, ए, ओ							
5	पुटपाक	पी, ए, ओ							
6	विदलक	पी, ए, ओ							
7	नेत्र पिंडी	पी, ए, ओ							
8	कर्णपूर्ण/कर्ण धूपण	पी, ए, ओ							
9	कवल/गंडूश	ए, ओ							
10	शिरोधरा	पी, ए, ओ							
11	शिरो पिचू	पी, ए, ओ							
12	शिरो वस्थी	पी, ए, ओ							
13	शिरो अभ्यंग	पी, ए, ओ							
14	मुखलेप	पी, ए, ओ							

	विशिष्ट दक्षताएं / कौशल	संपादित / सहायता प्रदान / अवलोकन किये गए (पी, ए, ओ)	संपादित		सहायता प्रदान		अवलोकन किये गए		संकाय / प्रीसेप्ट के हस्ताक्षर एवं दिनांक
			संख्या	हस्ताक्षर	संख्या	हस्ताक्षर	संख्या	हस्ताक्षर	
15	प्रचन्ना कर्म	पी, ए, ओ							
16	जलौकवचरणम	पी, ए, ओ							
17	नास्य कर्म	पी, ए, ओ							
18	क्षरा प्रतिसरण	ए, ओ							
19	मूर्ध तेल	पी, ए, ओ							
ग	**शल्य तंत्र प्रक्रियाएं**								
1	भगंदर में क्षारसूत्र अनुप्रयोग	ए, ओ							
2	अग्निकर्म	ए, ओ							
3	जलौकवचरणम	पी, ए, ओ							
4	क्षार कर्म	ए, ओ							
5	यंत्र विधि	ए, ओ							
6	व्रणोपचार	ए, ओ							
7	छोटे और बड़े ऑपरेशन	ए, ओ							
8	विभिन्न प्रकार की पट्टियां	पी, ए, ओ							
9	शल्य प्रक्रियाओं में उपयोग किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के शल्य चिकित्सीय उपकरण	ओ							
10	टांकों के प्रकार	ओ							
घ	**स्त्री रोग और प्रसूति तंत्र प्रक्रियाएं**								
1	योनिधावन	ए, ओ							
2	उत्तर वस्थी	ए, ओ							
3	योनि पिचु धारण	ए, ओ							
4	योनि धूपन	ए, ओ							
5	योनि वर्ति	ए, ओ							
6	योनि पुरण	ए, ओ							
7	योनि परिशेक	ए, ओ							
8	पैप स्मीयर	ए, ओ							
9	सर्वाइकल पंच बायोप्सी	ए, ओ							
10	एंडोमेट्रियल बायोप्सी	ए, ओ							
11	सर्वाइकल कॉटरीकरण	ए, ओ							
12	सर्वाइकल पॉलीपेक्टॉमी	ए, ओ							
13	हिस्टेरोसाल्पिंगोग्राफी	ए, ओ							
14	सामान्य प्रसव	पी, ए, ओ							
15	डाइलेशन और क्युरेटिज	ए, ओ							
16	ट्यूबल लिगेशन	ए, ओ							

	विशिष्ट दक्षताएं/कौशल	संपादित/सहायता प्रदान/अवलोकन किये गए (पी, ए, ओ)	संपादित		सहायता प्रदान		अवलोकन किये गए		संकाय/प्रीसेप्ट के हस्ताक्षर एवं दिनांक
			संख्या	हस्ताक्षर	संख्या	हस्ताक्षर	संख्या	हस्ताक्षर	
17	बार्थोलिन सिस्टेक्टोमी	ए, ओ							
18	डिम्बग्रंथि सिस्टेक्टोमी	ए, ओ							
19	शल्यजनन	ए, ओ							
20	एब्डॉमिनल हिस्टेरेक्टॉमी	ए, ओ							
21	वेजिनल हिस्टेरेक्टॉमी	ए, ओ							
22	पेरिनियल छीज की मरम्मत	ए, ओ							
23	गर्भाशय ग्रीवा का फैलाव	ए, ओ							

टिप्पणी:

- छात्रों के कौशल प्रदर्शन करने में सक्षम पाए जाने पर संकाय द्वारा इस पर हस्ताक्षर किये जाएंगे।
- छात्रों से सूचीबद्ध कौशल/दक्षताओं का संपादन तब तक बार–बार करना अपेक्षित है, जब तक कि वे स्तर 3 तक की दक्षता तक नहीं पहुंच जाते हैं, उसी के बाद संकाय द्वारा प्रत्येक दक्षता के समक्ष हस्ताक्षर किये जाएंगे।
- संकाय को यह सुनिश्चित करना होगा कि प्रत्येक योग्यता के लिए स्तर 3 तक पहुंचने के बाद ही हस्ताक्षर किए जाएं।
- स्तर 3 योग्यता यह दर्शाती है कि छात्र बिना किसी पर्यवेक्षण के दक्षता का प्रदर्शन करने में सक्षम है।
- स्तर 2 योग्यता यह दर्शाती है कि छात्र पर्यवेक्षण के साथ दक्षता का प्रदर्शन करने में सक्षम है।
- स्तर 1 योग्यता यह दर्शाती है कि छात्र पर्यवेक्षण के साथ भी उस दक्षता/कौशल का प्रदर्शन करने में सक्षम नहीं है।

परिशिष्ट 4

नैदानिक अहर्ताएं

क्र.सं.	नैदानिक अहर्ताएं	तिथि	संकाय/प्रीसेप्ट के हस्ताक्षर
1.	स्वास्थ्य परिचर्चा		
1.1	विषयः		
1.2	विषयः		
2.	अभिभावक और परिजनों को परामर्श देना		
3.	स्वास्थ्य आंकलन		
3.1	व्यस्कः		
3.2	शिशुः		
4.	मामले का अध्ययन और प्रस्तुति (प्रत्येक विशेषता में एक–एक)		
4.1	नैदानिक स्थिति का नामः		
4.2	नैदानिक स्थिति का नामः		
4.3	नैदानिक स्थिति का नामः		
4.4	नैदानिक स्थिति का नामः		
4.5	नैदानिक स्थिति का नामः		
4.6	नैदानिक स्थिति का नामः		
5.	औषधि का अध्ययन, प्रस्तुति और रिपोर्ट		
5.1	औषधि का नामः		
5.2	औषधि का नामः		
5.3	औषधि का नामः		

क्र.सं.	नैदानिक अहर्ताएं	तिथि	संकाय/प्रीसेप्ट के हस्ताक्षर
5.4	औषधि का नाम:		
5.5	औषधि का नाम:		
6.	दौरे और पदस्थापन की रिपोर्ट		
7.	सामूहिक परियोजना		
8.	आयुर्वेद फॉर्मुलेरीज़ फ़ाइल		
9.	बेड साइड राउंड आयोजित करना		

संकाय/प्रीसेप्टर के हस्ताक्षर कार्यक्रम समन्वयक के हस्ताक्षर

परिशिष्ट–5

नैदानिक अनुभव विवरण (प्रत्येक विभाग से न्यूनतम 5 शर्तें)

नैदानिक क्षेत्र का नाम	नैदानिक अवस्था	देखभाल प्रदान किये गए दिनों की संख्या	संकाय/प्रीसेप्टर के हस्ताक्षर

संकाय/प्रीसेप्टर के हस्ताक्षर कार्यक्रम समन्वयक के हस्ताक्षर

डॉ. टी. दिलीप कुमार, अध्यक्ष, आईएनसी
[विज्ञापन-III/4/असा./628/2022-23]

INDIAN NURSING COUNCIL

NOTIFICATION

New Delhi, the 22nd February, 2023

INDIAN NURSING COUNCIL (POST BASIC DIPLOMA IN AYURVEDA NURSING – RESIDENCY PROGRAM) REGULATIONS, 2022

F.No. 11-1/2022-INC.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 16 of Indian Nursing Council Act, 1947 (XLVIII of 1947), as amended from time to time, the Indian Nursing Council hereby makes the following regulations, namely:—

1. SHORT TITLE AND COMMENCEMENT

i. These Regulations may be called the **Indian Nursing Council (Post Basic Diploma in Ayurveda Nursing – Residency Program) Regulations, 2022.**

ii. These shall come into force on the date of notification of the same in the Official Gazette of India.

2. DEFINITIONS

In these Regulations, unless the context otherwise requires,

i. `the Act` means the Indian Nursing Council Act, 1947 (XLVIII of 1947) as amended from time to time;

ii. 'the Council' means the Indian Nursing Council constituted under the Act;

iii. 'SNRC' means the State Nurse and Midwives Registration Council, by whichever name constituted, by the respective State Governments;

iv. 'RN & RM' means a Registered Nurse and Registered Midwife (RN & RM) and denotes a nurse who has completed successfully, recognised Bachelor of Nursing (B.Sc. Nursing) or Diploma in General Nursing and Midwifery (GNM) course, as prescribed by the Council and is registered in a SNRC as Registered Nurse and Registered Midwife;

v. 'Nurses Registration & Tracking System (NRTS)' means a system developed by the Council and software developed in association with National Informatics Centre (NIC), Government of India, and hosted by NIC for the purpose of maintenance and operation of the Indian Nurses Register. It has standardised forms for collection of the data of Registered Nurse and Registered Midwife (RN & RM)/Registered Auxiliary Nurse Midwife (RANM)/Registered Lady Health Visitor (RLHV) upon Aadhar based biometric authentication;

vi. 'NUID' is the Nurses Unique Identification Number given to the registrants in the NRTS system;

vii. 'General Nursing and Midwifery (GNM)' means Diploma in General Nursing and Midwifery qualification recognized by the Council under Section 10 of the Act and included in Part-I of the Schedule of the Act.

POST BASIC DIPLOMA IN AYURVEDA NURSING – RESIDENCY PROGRAM

I. INTRODUCTION

Ayurveda Nursing is a new speciality that aim to prepare specialist nurses who can provide competent care to patients seeking Ayurveda treatment for various health issues. As per Ayurveda, Paricharika (Nurse) is one of the major pillars (Chikitsa Chatushpada) of health care system. The detailed guideline regarding Ayurveda Nursing has been enumerated in classical texts.

The need has been felt to integrate AYUSH system into modern medical system with emphasis on filling up gaps in treatment for modern day health challenges. It has been proposed in National Health Policy 2017 to introduce AYUSH system to medical and nursing professionals in an amiable manner for their understanding and application in patient care.

II. PHILOSOPHY

The Council believes that registered nurses need to be further trained as specialist nurses to function in various emerging speciality areas of practice and the training should be competency based. One such area that demands specialist nurses is Ayurveda Nursing. Expanding roles of nurses and change in the health care delivery system necessitates additional training to prepare nurses with specialized skills and knowledge to deliver competent, intelligent and appropriate care to patients in Ayurveda health centres. Registered nurses need to be trained in Ayurveda Nursing care in clinical and community setting in order to provide competent care to patients and enhance their quality of life.

III. CURRICULAR FRAMEWORK

The Post Basic Diploma in Ayurveda Speciality Nursing education is a one-year residency program and its curriculum is conceptualized encompassing major speciality courses for speciality nursing practice. The major speciality courses are organized under Introduction to Sanskrit, Basic Concepts of Ayurveda, Shareera Rachana & Shareera Kriya Vijnanam, Nidanam & Manasika Rogi Paricharana, Dravyaguna, Bhaishajya Kalpana Vijnanam, Swasthavritta & Yoga, Shalya Karma Paricharana, Shalakya Karma Paricharana, Sishu Paricharana, Stri Roga & Prasuti Tantra Paricharana and Panchakarma.

The foundation of Ayurveda Nursing practice such as professionalism, communication & patient education, clinical leadership & resource management and evidence based & applied research are short courses that aim to provide the students with the knowledge, attitude and competencies essential to function as accountable, committed, safe and competent specialist nurses.

The Curricular framework for Post Basic Diploma in Ayurveda Speciality Nursing – Residency Program is illustrated in the following ***figure 1.***

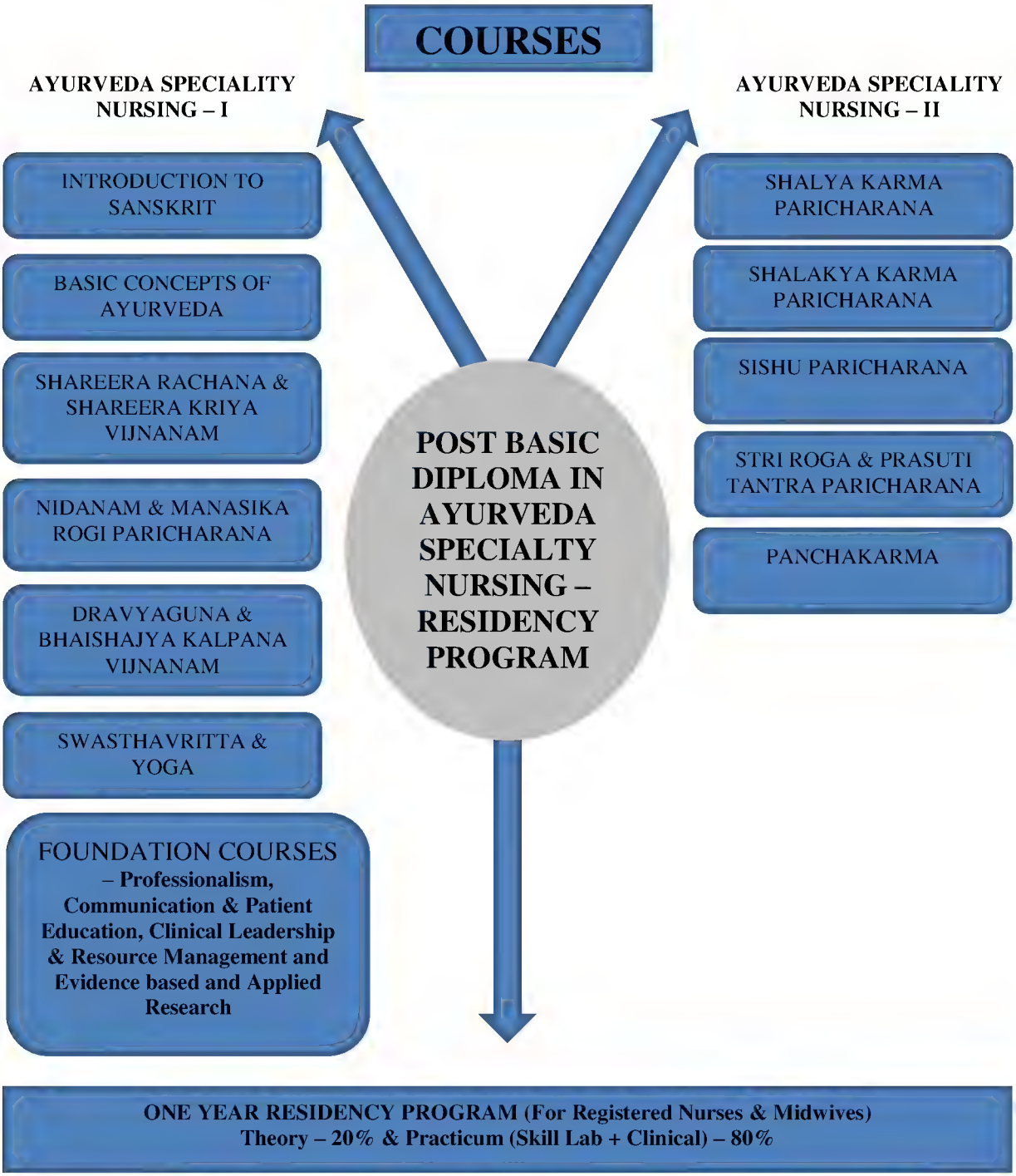

Figure 1: Curricular Framework: Post Basic Diploma in Ayurveda Speciality Nursing – Residency Program

IV. AIM/PURPOSE & COMPETENCIES

Aim

This program is designed to prepare nurses with specialized skills, knowledge and attitude in providing quality care to patients with various disorders admitted to Ayurveda hospitals. It further aims to prepare technically qualified and trained specialist nurses who will function effectively and optimally at Ayurveda health centres providing high standards of care.

Purpose

The purpose of the course is to train nurses to:

1. Provide quality care to patients admitted in Ayurveda hospitals with an actual or potential health problem.
2. Manage and supervise patient care in clinical and community settings.
3. Teach nurses, allied health professionals, patients and communities in areas related to Ayurveda Nursing.

4. Conduct research in areas of Ayurveda Nursing.

Competencies

On completion of the program, the Ayurveda specialist nurse will be able to:

1. Describe the concepts, principles and standards of Ayurveda Nursing practice.
2. Demonstrate professional accountability for the delivery of nursing care as per INC standards that is consistent with moral, altruistic, legal, ethical, regulatory and humanistic principles in Ayurveda practice.
3. Communicate effectively with patients, families and professional colleagues fostering mutual respect and shared decision making to enhance health outcomes.
4. Educate and counsel patients and families to participate effectively in treatment and care and enhance their coping abilities through crisis and bereavement.
5. Demonstrate understanding of clinical leadership and resource management strategies and use them in Ayurveda care and settings, promoting collaborative and effective teamwork.
6. Identify, evaluate and use the best current evidence in Ayurveda care and treatment coupled with clinical expertise and consideration of patient's preferences, experience and values to make practical decisions in Ayurveda Nursing practice.
7. Participate in research studies that contribute to evidence-based Ayurveda Nursing care interventions with basic understanding of research process.
8. Apply basic sciences in the assessment, diagnosis and treatment of the physiological, physical, psychological, social & spiritual problems of patients and their families with various disorders.
9. Apply nursing process in caring for patients with various disorders.
10. Describe the principles of various therapies and treatment modalities in Ayurveda.
11. Demonstrate specialized practice, competencies/skills relevant in providing care to patients under different treatment regimens.
12. Develop competencies in rehabilitative measures through various techniques like lifestyle modification, dietary management and yoga techniques.
13. Develop understanding of the method of drug procurement, storage, administering and maintenance of various drugs.
14. Demonstrate safe delivery of various therapies to patients and protect them from occupational harm.
15. Conduct clinical audit and participate in quality assurance activities in Ayurveda health centres.
16. Teach and supervise nurses and allied health workers.
17. Collaborate with other health care providers and utilize resources in caring patients admitted in Ayurveda hospitals.

V. PROGRAM DESCRIPTION & SCOPE OF PRACTICE

The Post Basic Diploma in Ayurveda Speciality Nursing – Residency Program is a one-year residency program with a main focus on competence-based training. Further it is designed to prepare registered nurses (GNM or B.Sc.) with specialized knowledge, skills and attitude in providing quality Ayurveda nursing care to patients and their families. Theory includes speciality courses besides practicum. The theory component comprises 20% and practicum (Clinical & Lab) 80%. On completion of the program, certification and registration as additional qualification with respective SNRC, the Ayurveda specialist nurse will be employed only in the speciality hospital/department/unit as a specialist nurse. Specialist nurse cadre/position should be created both at Government/Public and Private sectors. The Diploma will be awarded by respective examination board/SNRC/University approved by the Council.

VI. MINIMUM REQUIREMENTS/GUIDELINES FOR STARTING POST BASIC DIPLOMA IN AYURVEDA SPECIALITY NURSING – RESIDENCY PROGRAM

The program may be offered at:

1. Ayurveda hospital offering higher studies (graduate/postgraduate) in Ayurveda, having minimum of 100 beds with diagnostic, therapeutic and state of the art Ayurveda therapy units with all types of specialized nursing care facilities.
2. Above eligible institution shall get recognition from the concerned SNRC for Post Basic Diploma in Ayurveda Speciality Nursing – Residency Program for the particular Academic year, which is a mandatory requirement.
3. The Council shall after receipt of the above documents/proposal would then conduct statutory inspection of the recognized training nursing institution under Section 13 of Indian Nursing Council Act, 1947 in order to

assess suitability with regard to availability of Teaching faculty, Clinical and infrastructural facilities in conformity with regulations framed under the provisions of Indian Nursing Council Act, 1947.

1. Nursing Teaching Faculty

a. Full time Nursing faculty/Nursing preceptor in the ratio of 1:10.

b. Multi-disciplinary Guest faculty from the field of Ayurveda (Professors, Associate Professors and Assistant Professors) in related specialities.

c. Minimum number of nursing faculty should be two. {One should be M.Sc. (Nursing)}

Eligibility Criteria (Qualification and Experience)

- **Nursing Faculty:**

  B.Sc. (Nursing) Ayurveda recognised by State University/SNRC.

  OR

  M.Sc. (Nursing) with one-year Post Basic Diploma in Ayurveda Nursing recognised by the Council. Be a Registered Nurse and Registered Midwife (RN & RM) or equivalent with any SNRC and having NUID number.

  OR

  B.Sc. (Nursing)/Post Basic B.Sc. (Nursing) with one-year Post Basic Diploma in Ayurveda Nursing recognised by the Council. Be a Registered Nurse and Registered Midwife (RN & RM) or equivalent with any SNRC and having NUID number.

  - **Experience:** Minimum 2 years of experience in reputed Ayurveda hospital.
  - **Preceptors**

    Medical Preceptor: Specialist (Ayurveda Specialist) doctor with PG qualification (with 3 years post PG experience and faculty level/consultant level preferable)

    Nursing Preceptor:

    B.Sc. (Nursing) Ayurveda recognised by State University/SNRC.

    OR

    M.Sc. (Nursing) with one year experience in reputed Ayurveda hospital. Be a Registered Nurse and Registered Midwife (RN & RM) or equivalent with any SNRC and having NUID Number.

    OR

    B.Sc. (Nursing)/Post Basic B.Sc. (Nursing) with two years' experience in reputed Ayurveda hospital. Be a Registered Nurse and Registered Midwife (RN & RM) or equivalent with any SNRC and having NUID number.

  - **Preceptor-Student Ratio: Nursing 1:10, Medical 1:10**
    (Every student must have a Medical and Nursing Preceptor)

2. Budget

There should be budgetary provision for staff and student salary, honorarium for part time teachers, clerical assistance, library and contingency expenditure for the program in the overall budget of the institution.

3. Physical and Learning Resources at Hospital/College

a. Class room/conference room at the clinical area: 1

b. For skill labs there are various Panchakarma & Kriyakalpa Theatres and Bhaishajya Kalpana Department.

Skill lab/theatres details are listed in Appendix-1.

c. Library and computer facilities with access to online journals:

- Institutional library having current textbooks and journals and periodicals in Ayurveda, Nursing Administration, Nursing Education, Nursing Research and Statistics. Permission to use institutional library to be extended to nurses and Ayurveda Nursing students.
- Computer with Internet facility.
- e-learning facilities

d. Teaching Aids: Smart classrooms with following facilities:

- Slide projector
- TV
- Video viewing facility

- LCD projector
- Computers
- Internet facility
- Equipment for demonstration of skills for Ayurveda treatments and therapies.
- Manikins and simulators, if available in the facility.

e. Office facilities:

- Services of Typist/DEO, MTS/Peon, Safai Karmachari
- Facilities for office, equipment and supplies such as stationary, computer with printer, Xerox machine etc.

4. Clinical Facilities

a. Parent Ayurveda hospital having minimum of 100 beds with diagnostic, therapeutic and state of the art Ayurveda therapy units.

b. Hospital must have advanced diagnostic, treatment and care facilities.

c. Nurse staffing of units as per Central Council of Integrated Medicine (CCIM)/SIU norms per shift.

d. Student-Patient ratio - 1:3

5. Admission Terms and Conditions/Entry Requirements

The student seeking admission to this program should:

a. Be a Registered Nurse and Registered Midwife (RN & RM) or equivalent with any SNRC and having NUID number.

b. Possess a minimum of one-year clinical experience as a staff nurse.

c. Nurses from other countries must obtain an equivalence certificate from the Council before admission.

d. Be physically fit.

e. Selection must be based on the merit of entrance examination/interview held by the Competent Authority.

6. No. of Seats

a. For hospitals having 100-200 beds, Number of seats - 20 Seats

b. For hospitals having 200-500 beds, Number of seats - 40 Seats

c. For hospitals having more than 500 beds, Number of seats - 60 Seats

7. No. of Candidates

One candidate for 3 beds.

8. Salary

a. In-service candidates will get regular salary.

b. Salary for the other candidates as per the salary structure of the hospital where the course is conducted.

VII. EXAMINATION REGULATIONS AND CERTIFICATION

EXAMINATION REGULATIONS

Invigilation and Diploma Awarding Authority: Respective Examination Board/SNRC/University approved by the Council.

1. Eligibility for appearing for the Examination

a. Attendance: Theory and Practical – 80%. However, 100% clinical attendance have to be completed prior to certification.

b. Candidate who successfully completes the necessary requirements such as logbook and clinical requirements is eligible and can appear for the final examination.

2. Practical Examination

a. Observed Practical/Clinical: Final internal and external examination will include assessment of actual clinical performance in real settings including viva. Mini clinical evaluation exercise for 3-4 hours (Nursing process application and direct observation of procedural competencies). Minimum period of assessment in the clinical area is 5-6 hours.

b. Maximum number of students per day: 10 students.

c. Practical examination should be held in clinical area only.

d. The team of three practical examiners will include one internal examiner with B.Sc. (Nursing) Ayurveda recognised by State University/SNRC/M.Sc. (Nursing) with one year Post Basic Diploma in Ayurveda Nursing recognised by the Council B.Sc. (Nursing)/Post Basic B.Sc. (Nursing) with one year Post Basic Diploma in Ayurveda Nursing recognised by the Council (B.Sc. faculty with two years' experience out of which minimum one year is teaching experience and M.Sc. faculty with two years' experience out of which minimum one year is teaching experience), one external examiner (with the same qualification and experience stated above) and any Medical faculty specialized in Ayurveda and one medical internal examiner who should be preceptor for the respective speciality program.

e. B.Sc./M.Sc. (Nursing) with two years of experience in reputed Ayurveda hospital out of which one year is teaching experience in the same hospital, may be permitted to be examiners initially, until nursing faculty examiners with Post Basic Diploma in Ayurveda Nursing are trained and available.

f. The practical examiner and the theory examiner should be the same Nursing Faculty.

3. Standard of Passing

a. In order to pass, a candidate should obtain at least 60% marks in aggregate of internal assessment and external examination both together, in each of the theory and practical papers. Less than 60% is considered fail.

b. Students will be given opportunity of maximum of 3 attempts for passing.

c. If the student fails in either theory or practical, he/she needs to appear for the exam failed either theory or practical only.

CERTIFICATION

a. Title: Post Basic Diploma in Ayurveda Speciality Nursing – Residency Program.

b. A Diploma is awarded by examination board approved by the Council/University, upon successful completion of the prescribed study program, which will state that:

i. Candidate has completed all the courses of study under the Post Basic Diploma in Ayurveda Speciality Nursing – Residency Program.

ii. Candidate has completed 80% Theory and 100% Clinical requirements.

iii. Candidate has passed the prescribed examination.

VIII. SCHEME OF EXAMINATION

Courses	Int. Ass. Marks	Ext. Ass. Marks	Total Marks	Exam Hours (External)
Theory*: *Experiential/Residential Learning Ayurveda Speciality Nursing (I and II) 1: Ayurveda Speciality Nursing–I 2: Ayurveda Speciality Nursing–II	25 (10+15)	75 (35+40)	100	3
Practicum: Ayurveda Speciality Nursing ▪ Observed practical/clinical (Direct observation of actual performance at real settings) including viva - Mini clinical evaluation exercise for 3-4 hours (Nursing process application and direct observation of procedural competencies)	75	150	225	Minimum 5-6 hours in the clinical area
Grand Total	**100**	**225**	**325**	

OSCE is recommended however,

If no OSCE included, the internal practical can be reduced to 50 and the external can be for 100. Total internal will be 75 (25 theory and 50 practical). The total external will be 175 (75 theory and 100 practical).

Grand Total = 75 + 175 = 250

The same if changed will have to be changed in assessment guidelines also.

IX. PROGRAM ORGANIZATION/STRUCTURE

1. Courses of Instruction
2. Implementation of Curriculum
3. Clinical Practice (Residency Posting)
4. Teaching Methods
5. Methods of Assessment
6. Log Book and Clinical Requirement

1. Courses of Instruction – Delivered through Mastery of Learning (Skill Lab Practice) and Practical Learning (Clinical Practice) approaches

Subject	Theory hours	Lab/Skill Lab hours	Clinical hours
Ayurveda Speciality Nursing Course			
Ayurveda Speciality Nursing–I			
Unit-1 Introduction to Sanskrit	30		
Unit-2 Basic Concepts of Ayurveda	40		
Unit-3 Part A: Shareera Rachana & Part B: Shareera Kriya Vijnanam (Basic Anatomy and Physiology)	30	10	
Unit-4 Part A: Nidanam (Medical Nursing) & Part B: Manasika Rogi Paricharana (Psychiatric Nursing)	40		200
Unit-5 Part A: Dravyaguna (General Pharmacology) & Part B: Bhaishajya Kalpana Vijnanam (Pharmacological Nursing)	30	10	100
Unit-6 Swasthavritta and Yoga	30	10	150
Unit-7 FOUNDATION – Professionalism, Communication & Patient Education, Clinical Leadership & Resource Management and Evidence-based and Applied Research	30		
Ayurveda Speciality Nursing–II			
Unit-8 Shalya Karma Paricharana (Surgical Nursing) (Part A) & (Part B)	30		200
Unit-9 Shalakya Karma Paricharana (ENT & Ophthalmology Nursing)	30		200
Unit-10 Sishu Paricharana (Paediatric Nursing)	30		145
Unit-11 Stri Roga and Prasuti Tantra Paricharana (Gynaecology & Obstetrics Nursing)	30		200
Unit-12 Panchakarma (Part A) & (Part B)	50	10	335
Total: 1970 hours	**400 hours (10 weeks)**	**40 hours (1 week)**	**1530 hours (33 weeks)**

Total weeks available in a year: 52 weeks

- AL + CL + SL + Public Holidays: 6 weeks
- Exam Preparation and Exam: 2 weeks
- Theory and Practical: 44 weeks

2. **Implementation of the Curriculum** (Theory: 20% and Skill Lab + Clinical: 80%)

Block Classes: 3 weeks × 42 hours = 126 hours, Residency of 41 weeks × 45 hours per week = 1845 hours, Total: 1970 + 1 = 1971 hours (1 extra hour)

- Block Classes: [Theory & Skill Lab experience = 3 weeks × 42 hours per week (126 hours), {Theory = 120 hours, Skill Lab = 6 hrs, Total = 126 hrs}]
- Clinical Practice including Theory and Skill Lab = 41 weeks × 45 hours per week (1845 hours) {Theory = 281 hrs, Skill Lab = 34 hours, Clinical = 1530 hours}

  i.e. Theory: 401 (120 + 281) hours, Skill Lab: 40 (6 + 34) hours, Clinical: 1530 hours = 1971 hours (1970 + 1)

  - **281 hours of theory and 34 hours of skill lab learning can be integrated during clinical experience. Mastery learning and practical learning approaches are used in training the students throughout the program.**

  Skill lab/theatres details are listed in Appendix-1.

3. **Clinical Practice**

Clinical Residency Experience: A minimum of 45 hours per week is prescribed, however, it is flexible with different shifts and OFF followed by on call duty every week or fortnight.

Clinical Placements: The students will be posted to the under mentioned clinical areas during their training period.

S.No.	Clinical Area	Week	Remarks
1	Out-Patient Departments	2	Own Ayurveda Hospital & Reputed institutions for field visits and tour
2	Integrated OPD (Unani, Siddha & Homeopathy)	1	
3	In-Patient Department	12	
4	Panchakarma Theatres (Adults & Paediatrics)	9	
5	Kriyakalpa Theatres	4	
6	Operation Theatres & ICU	2	
7	Labour Room (SRPT)	2	
8	Pharmacy	2	
9	Department Laboratories	1	
10	Hospital Administration	1	
11	Yoga department and Swasthavritta OPD	2	
12	Clinical Pathology Laboratory	1	
13	Para-Surgical & Plaster Room	1	
14	Medical camps	1	
Total		**41 weeks**	

Note: The residency students will follow the same duty schedule as Staff Nurses/Nursing Officers with different shift duties. In addition to that, for 40 weeks 8 hours every week is dedicated for their learning that can be offered for theory (For example: Faculty lecture – 5 hours, Nursing and interdisciplinary rounds – 1 hour, Clinical presentation/Case study report/Clinical assignments – 1 hour) and Skill lab practice – 1 hour to cover a total of 281 hours of theory and 34 hours of skill lab practice. A small group research project can be conducted during clinical posting applying the steps of research process and written report to be submitted.

4. **Teaching Methods**

Theoretical, skill lab and clinical teaching can be done in the following methods and integrated during clinical posting:

- Case/clinical presentation and case study report
- Drug study and presentation
- Bedside clinic/Nursing rounds/Interdisciplinary rounds

- Clinical seminar
- Faculty lecture and discussion in the clinical area
- Demonstration and skill training in various theatres and at bedside
- Directed reading and Self-study
- Role play
- Symposium/group presentation
- Group research project
- Clinical assignments
- Patient engagement exercise (engaging patients in care decisions to improve health outcomes using information technology). For example: discharge planning, follow up and rehabilitation.
- Educational visits to various centres
- Health education by using different AV Aids.

5. Method of Assessment

- Written test
- Practical examination: Observed Practical (Direct observation of actual clinical performance at real settings)
- Written assignments
- Project
- Case studies/care plans/clinical presentation/drug study
- Clinical performance evaluation
- Completion of clinical procedural competencies and clinical requirements

For assessment guidelines refer Appendix-2.

6. Clinical Log Book/Procedure Book

At the end of each clinical posting, Clinical Log Book (Specific Procedural Competencies/Clinical Skills) [***Appendix-3***], Clinical Requirements [***Appendix-4***] and Clinical Experience Details [***Appendix-5***] have to be signed by the concerned clinical faculty/preceptor.

X. COURSE SYLLABUS

1. AYURVEDA SPECIALITY NURSING– I

Introduction to Sanskrit, Context/Introduction to Ayurveda and Basic Sciences applied to Ayurveda Nursing Practice (Basic Concepts of Ayurveda), Shareera Rachana & Shareera Kriya Vijnanam (Basic Anatomy and Physiology), Nidanam (Medical Nursing) & Manasika Rogi Paricharana (Psychiatric Nursing), Dravyaguna & Bhaishajya Kalpana Vijnanam (General Pharmacology & Pharmacological Nursing), Swashthavritta & Yoga (Lifestyle) and Foundational Courses.

Theory: 230 hours & Practical: 450 hours

Course Description: This course is designed to help students to develop understanding and in-depth knowledge regarding the context of Ayurveda care provisions and application of basic sciences in the diagnosis and treatment of patients seeking Ayurveda treatments and understanding of professionalism, communication, patient & family education, counselling, clinical leadership & resource management and evidence based & applied research in Ayurveda Nursing practice.

Units	Time (hours)	Learning Outcome	Content	Teaching/ Learning Activities	Assignments/ Assessment Methods
1.	30 (T)	To gain basic knowledge of Sanskrit	**Sanskrit** a) Shabdamanjari b) Sidharoopam c) Conjugation of Verbs	▪ Lecture cum discussion	▪ Class Test
2.	40 (T)	Understand the basic concepts of Ayurveda system of health care in diagnosis, treatment and care of patients with various diseases.	**Basic Concepts of Ayurveda** a) Basic concepts of Ayurveda – General awareness of the evolution of Ayurveda and Panchamahabootha theory b) Dosha, Dhathu, Mala Vijna-nam and concepts of Manas **Dravya**	▪ Lecture cum discussion	▪ Class Test

Units	Time (hours)	Learning Outcome	Content	Teaching/ Learning Activities	Assignments/ Assessment Methods
			a) Definition b) Constitution c) Classification and elaboration of terms: Rasa, Guna, Veerya, Vipaka, Prabhava with proper definition, constitution and classification **Concepts of Roga and Arogya** a) Concepts of Agni and its importance b) Concepts of Prakruthi, Koshta, Desa, Kala, Oushadha and Oushadhkala		
3.	30 (T)	Describe the human body systems in terms of Ayurveda and basic principle behind the occurrence of diseases	**Part A: Shareera Rachana and Part B: Shareera Kriya Vijnanam (Basic Anatomy and Physiology)** **Part A: Shareera Rachana** i. Shareera Upakrama ii. Concepts of body and importance of Anatomy iii. Evolution of the body and functional importance of Tridosha, Triguna, Dosha, Dhathu and Mala iv. Garbha Shareera, study of concepts of Grabhadharana, Poshana and Samvahana. v. Asthi Shareeram vi. Study of bones – identification, classification, structure along with attachment of muscles vii. Types of joints viii. Marma Shareeram **Part B: Shareera Kriya Vijnanam** Concepts of the following physiological factors with its proper definition, constitution and classification: i. Dosha ii. Dhatu iii. Mala iv. Srota v. Upadhatu vi. Ojas vii. Siradhamani viii. Indriyan ix. Prakruthi x. Snayu xi. Sandhi	▪ Lecture cum Discussions ▪ Demonstration of assessment of patients	▪ Class Test ▪ Return demonstration under the guidance of preceptors
4.	40 (T) 200 (P)	Explain the definition, aetiology, pathophysiology, signs and symptoms and diagnostic measures of various diseases in Ayurveda	**Part A: Nidanam (Medical Nursing)** a. Development of medicine b. Concept of disease and cause c. Definition of identification of aetiology d. Pathophysiology and	▪ Lecture cum Discussions ▪ Case Presentations	▪ Case Study ▪ Clinical Presentation ▪ Class Test

Units	Time (hours)	Learning Outcome	Content	Teaching/ Learning Activities	Assignments/ Assessment Methods
		perspectives and nursing management of different disease conditions	symptomatology of following diseases: i. Jwara ii. Raktapitta iii. Kasa, Swasa, Hikka, Swarabheda iv. Rajayakshma v. Agnimandya vi. Ajeerna vii. Vishoochika viii. Alasaka ix. Grahani x. Vatavyadhi xi. Vatarakta xii. Amavata xiii. Hridroga xiv. Mootrakricha xv. Mootraaghata xvi. Asmari xvii. Prameha xviii. Mehapidaka xix. Medoroga xx. Kushta		
			e. Study of Ayurvedic Diagnostic measures i. Apthopadesadi ii. Trividha pareeksha iii. Shadanga Chaturvidha iv. Astasthana pareeksha v. Dasavidharoga pareeksha vi. Srotopareeksha vii. Dathu, Upadatu pareeksha		
			f. First Aid in Ayurveda for different conditions i. Study of Upashaya ii. Anupashayabheda iii. Arishta lakshana of above said disease		
			Part B: Manasika Rogi Paricharana (Psychiatric Nursing) i. Definition ii. Nature of mind in Ayurveda iii. Controversy regarding physical nature of mind iv. Controversy regarding sight of mind v. Guna vi. Karma vii. Concepts of Prajnaparadha viii. Definition of Budhi ix. Smriti x. Lakshanas		
			Rajastamo Guna i. Unmada and Apasmaara ii. Substance abuse iii. Grahabhaadha		

Units	Time (hours)	Learning Outcome	Content	Teaching/ Learning Activities	Assignments/ Assessment Methods
			iv. Adhathwabinivesa **Specific treatments of Manasika Roga** i. Medication ii. Talam iii. Talapothichil iv. Shirodhara v. Snehapana vi. Virechana vii. Shirovasthi		
5.	30(T) 100 (P)	Explain pharmacology, pharmacokinetics & pharmacodynamics, preparation, distribution and nursing interventions of various Ayurvedic formularies	**Part A: Dravyaguna (General Pharmacology)** i. Introduction and Definition of Ayurvedic pharmacology ii. Rasa, Guna,Veerya,Vipaka, Prabhava iii. Source of drugs iv. Weight and Measures v. Pharmacological ethics and principles vi. Prescription mode and route of drug administration vii. Identification and authentic-cation of herbal drugs **Part B: Bhaishajya Kalpana Vijnanam (Pharmacological Nursing)** i. Posology, Ayurvedic pharmaceutical concepts ii. Shelf life and expiry of drugs iii. Awareness of Rasaoushadhees iv. High alert medication v. Adverse drug reaction vi. Look alike & sound alike drugs **Awareness of Different Kalpanas** i. Kwatha ii. Choorna iii. Avaleha iv. Asava v. Arishta vi. Arka vii. Rasaoushadhi viii. Bhasma ix. Anupanam x. Various external applications xi. Knowledge of route of administrations xii. Storage **Role of Nurse** i. Drug Administration ii. Responsibilities in pharmacological intervention related to systemic pharmacological agents	▪ Discussion ▪ Case Presentation	▪ Lab Experience ▪ Visits to Herbal Garden ▪ Herbarium collection ▪ Pharmacy ▪ Field Visits ▪ Report Writing

Units	Time (hours)	Learning Outcome	Content	Teaching/ Learning Activities	Assignments/ Assessment Methods
6.	30 (T) 150 (P)	Understand about the role of lifestyle, diet and yoga in management of various diseases and specific nursing interventions	**Swasthavritta and Yoga** i. Swasthavritta parichara ii. Athuravrutha parichara iii. Dinacharya iv. Rithucharya v. Sadvrutham vi. Janapadodhwamsaneeyam vii. Annapanavidhi viii. Annasamrakshaneeyam ix. Mathrashitheeyam x. Sathapathyadravya xi. Roganulpadhneeya and its details xii. Trayopasthamba xiii. Roga and Arogya xiv. Panathyaya xv. Paanajeerna xvi. Paramada xvii. Chikitsa parichaya	▪ Lecture cum Discussion	▪ Demonstration of Yoga ▪ Health Talks ▪ Preparation of diet chart for different conditions/ age groups
			Dietetics i. Introduction ii. Importance of Sadapathyaaharas iii. Bhojana vidhi iv. Bhojana kala v. Diets in various condition vi. Child nutrition		
			Yoga i. Introduction ii. Importance of Yoga iii. Yoga and physiology and study of different types of Yogasanam iv. Yoga in different types of diseases	▪ Yoga Sessions	▪ Return Demonstration of Yoga
			Rehabilitation Nursing i. Concept of Geriatric Nursing ii. Palliative care Nursing iii. Rasayana and Vachikarana chikitsa	▪ Lecture cum Discussion	▪ Health Talk ▪ Health Assessment
			Other Alternative Systems of Medicines i. Unani ii. Siddha iii. Homeopathy	▪ Assessment of patients	▪ Observation Reports
7.	30 (T)	Demonstrate understanding of professionalism and exhibit professionalism in the practice of Ayurveda Nursing	**PROFESSIONALISM** **Professionalism** i. Meaning and elements – accountability, knowledge, visibility and ethics in Ayurveda Nursing Practice ii. Professional values and professional behaviour iii. INC code of ethics, codes of professional conduct and practice standards	▪ Lecture cum Discussion	▪ Class Test

Units	Time (hours)	Learning Outcome	Content	Teaching/ Learning Activities	Assignments/ Assessment Methods
			iv. Ethical issues related to Ayurveda Nursing v. Expanding role of Nurse-Nurse practitioner vi. Professional organizations vii. Continuing nursing education		
		Describe Medico-legal aspects of Ayurveda Nursing	**Medico-Legal issues** i. Legislations and regulations related to Ayurveda Nursing ii. Consumer Protection Act iii. Negligence and Malpractice iv. Medico-legal aspects v. Records and Reports vi. Legal responsibilities of Ayurveda specialist nurses		
		Communicate effectively with patients, families and professional colleagues, fostering mutual respect and shared decision making to enhance health outcomes	**Communication** i. Channels and techniques of communication ii. Culturally sensitive communication iii. Development of nursing care plans and records iv. Information technology tools in support of communication v. Team communication	▪ Lecture ▪ Breaking bad news – Role Play ▪ Group Discussion	▪ Role Play/Skit
		Educate and counsel patients and families to participate effectively in treatment and care	**Patient and family education** i. Principles of teaching and learning ii. Principles of health education iii. Assessment of informational needs and patient's education iv. Developing patient education material	▪ Peer Teaching	▪ Conduct a group health education on relevant topic
			Counselling i. Counselling techniques ii. Patient and family counselling during breaking bad news, intensive treatment crisis intervention and end of life stage	▪ Counselling Sessions	▪ Role Play on counselling
		▪ Demonstrate understanding of clinical leadership and resource management strategies and use them in Ayurvedic care and settings ▪ Promoting collaborative and effective team work	**Clinical leadership and resource management** i. Leadership and management ii. Elements of management of Ayurveda Nursing care – planning, organizing, staffing, reporting, recording and budgeting iii. Clinical leadership and its challenges iv. Delegation v. Managing human resources in Ayurvedic units vi. Material management vii. Team management and working as interdisciplinary	▪ Lecture cum Discussion	▪ Plan a duty roster for Junior Nursing Officer/Staff Nurses working in ideal Ayurvedic department

Units	Time (hours)	Learning Outcome	Content	Teaching/ Learning Activities	Assignments/ Assessment Methods
			team member viii. Participation in making policies relevant to care of Ayurvedic patients		
		Prepare the unit for Ayurveda wards	i. Description of layout of Ayurveda wards	▪ Demonstration ▪ Discussion	▪ Plan a layout of an ideal Ayurveda ward
		Conduct clinical audit and participate in quality assurance activities	**Quality Assurance program in Ayurveda unit** i. Nursing audit ii. Key Performance Indicators (KPI) iii. Quality assurance – NABH	▪ Module – Accreditation	▪ Conducting Nursing Audits and preparation of Key Performance Indicators (KPI)
		▪ Describe research process and perform basic statistical tests ▪ Conduct research project using principles and steps of research ▪ Apply evidence based/best practices in professional practices	**Evidence based and application of applied research** i. Introduction to nursing research process ii. Data presentation, basic statistical tests and its application iii. Research priorities in Ayurveda Nursing practice iv. Formulation of problem/ question that are relevant to Ayurveda Nursing practice v. Review of literature to identify evidence based/best practices in Ayurveda Nursing practice vi. Implementation of evidence-based interventions in daily professional practice vii. Ethics in research	▪ Lecture ▪ Practice: writing of scientific paper ▪ Group research project	▪ Preparation of statistical data of Ayurveda department for last five years ▪ Conduct literature review on Ayurveda Nursing interventions/ group research project report
8.	30 (T) 200 (P)	Develop skill in assisting and performing various procedures in Shalya department for adult and paediatric patients and nursing management of different disease conditions	**Part A: Shalyakarma Paricharana (Surgical Nursing)** **Introduction** i. Definition ii. Sushruth Pradhanya iii. Vyadhi Pradhanya iv. Saadhya Asaadhya Vyadhi Prakaram	▪ Lecture cum Discussion ▪ Assisting with various surgical procedures ▪ Observation of various procedures	▪ Case Study ▪ Clinical Presentation ▪ Performing/ assisting various procedures under the guidance and supervision of preceptor ▪ Class Test
			Various Conditions and its management **Vruna** i. Definition ii. Aetiology iii. Pathophysiology iv. Types v. Symptoms vi. Complications vii. Vruna Upakrama viii. Sapta Upakrama ix. Shashti Upakrama		

Units	Time (hours)	Learning Outcome	Content	Teaching/ Learning Activities	Assignments/ Assessment Methods
			Aetiology, Pathophysiology, Symptomatology of various disease i. Nadi Vruna ii. Arsha iii. Rakta Sraava iv. Vidradhi v. Burn vi. Parinaamasoola vii. Kshudraroga viii. Grandhi ix. Apachi x. Arbudha xi. First Aid in poisonous bites of various animals, insects & snakes		
			Part B: Shalyakarma Paricharana **1. Yanthra Vidhi** **2. Shastra Karma – Procedures & Management** i. Study of Upasaya ii. Anupasaya iii. Study of Shastrakarma iv. Poorva & Paschaath karma v. Ashtavidha karma vi. Vruna Shodhana vii. Ropana dravya viii. Raktamokshanam ix. Siravedha x. Prachanna xi. Jaloukavacharanam xii. Ksharakarma xiii. Agnikarma xiv. Lepana vidhi xv. Ahara vidhi		
			3. Bandaging (Bandhana vidhi) i. Study of Ayurvedic description of different types of bandhas for fractures ii. Immobilization methods		
			4. Upachara, Pathya of Shalya Chikitsa		
			5. Instrument of the following procedures i. Shastra Karma ii. Kshara Karma iii. Agni Karma iv. Raktamokshanam		
9.	30 (T) 200 (P)	Understand the causes, pathophysiology, signs and symptoms, treatment modalities	**Shalakya Karma Paricharana (ENT & Ophthalmology Nursing)** **Introduction** i. Knowledge of Diseases ii. Hethu, Samprapthi	▪ Lecture ▪ Demonstration ▪ Discussions ▪ Group Presentation	▪ Case Study ▪ Clinical Presentation ▪ Performing/ assisting various

Units	Time (hours)	Learning Outcome	Content	Teaching/ Learning Activities	Assignments/ Assessment Methods
		of various diseases affecting the Eye and ENT in the perspective of Ayurveda and nursing management of different disease conditions	iii. Lakshana iv. Bheda v. Anubandha Upachara **Various conditions & Management** i. Netra Roga ii. Shiro Roga iii. Karna Roga iv. Nasa Roga v. Mukha Roga **Procedures** i. Karna Poorana ii. Dhooma Pana iii. Jaloukavacharanam iv. Kriya Kramas a. Kavala b. Gandoosha c. Shirovasti d. Nasya e. Anjana f. Tarpana g. Putpaaka h. Pindi i. Vidalaka j. Moordha taila k. Mukha lepa		procedures under the guidance and supervision of preceptor ▪ Class Test
10.	30 (T) 145 (P)	Explain the causes, pathophysiology, signs and symptoms, treatment modalities of various disorders affecting children in the perspective of Ayurveda and nursing management of different disease conditions	**Sishuparicharana (Paediatric Nursing)** i. Introduction ii. Definition iii. Types iv. Detailed Baalopacharaniya v. Baalarogaupachara vi. Baalamayaprathikshedha and related upachara karma vii. Visarpachikitsa upachara viii. Phakka roga chikitsa and its upachara ix. Danthobhedajanya rogachikitsa upachara	▪ Lecture cum Discussion ▪ Health Assessment ▪ Demonstration ▪ Case Presentation	▪ Case Study ▪ Clinical Presentation ▪ Class Test
11.	30 (T) 200 (P)	Explain the causes, pathophysiology, signs and symptoms, treatment modalities of various obstetrical and gynaecological disorders affecting women in the perspective of Ayurveda and nursing management of different disease conditions	**Stri Roga and Prasuti tantra Paricharana (Gynaecology & Obstetrics Nursing)** i. Definition ii. Reproductive physiology iii. Garbhini Vijyanam iv. Pumsavana upcharana v. Garbhini paricharya vi. Garbhavyapath vii. Yoni vyapath and its nursing care viii. Sootikopacharam ix. Soothika vijyanam x. Striroga chikitsa upacharanam **Gynaecological procedure** i. Pichu ii. Uttara Vasthi	▪ Lecture cum Discussion ▪ Demonstration	▪ Case Study Report ▪ Clinical Presentation ▪ Return Demonstration ▪ Class Test

Units	Time (hours)	Learning Outcome	Content	Teaching/ Learning Activities	Assignments/ Assessment Methods
			iii. Prakshalanam		
12.	50 (T) 335 (P)	Explain and demonstrate skill in nursing care of various panchakarma procedures	**Part A: Panchakarma** **Snehapana Vidhi** i. Type of Snehas ii. Properties iii. Sources of Sneha iv. Procedure of Snehapana with pre and post measuring diet regimen during Snehapana v. Time of administration vi. Dosage, Sadya Sneha vii. Samyak Snigdha lakshanas viii. Snehavyapath & its treatment ix. Samsarjana Karma	▪ Lecture cum Demonstration ▪ Case Discussions ▪ SOP preparation of Pre, Intra and Post procedure care ▪ Institutional Visit ▪ Report Writing	▪ Return demonstration of various panchakarma procedures ▪ SOP preparation & presentation of various procedures ▪ Class Test
			Swedana Vidhi i. Definition ii. Properties, types and detailed procedures iii. Indications and contraindications iv. Agneya & Anagneya Swedana vidhi v. Samyak Sweda lakshnas vi. Pre and post measures vii. Effects of swedana		
			Vamana Vidhi i. Definition ii. Properties, types and detailed procedures iii. Indications and contraindications iv. Pre and post measures v. Symptoms of Samyak and Asamyak vamana vi. Upchara vii. Samsarjana Karma		
			Virechana Vidhi i. Definition ii. Properties, types and detailed procedures iii. Indications and contraindications. iv. Pre and post measures v. Symptoms of Samyak and Asamyak Virechana vi. Sodhanaphala vii. Samsarjana karma		
			Vasthi Vidhi i. Definition ii. Properties, types and detailed procedures iii. Indication and contraindications iv. Pre and post measure v. Preparation of Vasthi Dravya vi. Description of Vasthi Yantra		

Units	Time (hours)	Learning Outcome	Content	Teaching/ Learning Activities	Assignments/ Assessment Methods
			vii. Time of administration viii. Posology of Vasthi ix. Samyak and Asamyak lakshanas		
			Nasya Vidhi i. Definition ii. Properties, types and detailed procedures iii. Indications and contraindications iv. Pre and post measure v. Time of administration vi. Therapeutic dosage vii. Samyak and Asamyak lakshanas		
			Part B: Panchakarma **Traditional Ayurvedic Treatment** i. Pizhichil ii. Uzhichil iii. Pinda Sweda (all types) iv. Annalepana v. Shiro Dhara vi. Takra Dhara vii. Thalam viii. Kayaseka (all types)		

2. AYURVEDA SPECIALITY NURSING–II

Nursing management of clinical conditions including assessment, diagnosis, treatment and specialized interventions for patients admitted in Ayurveda hospitals and the speciality subjects include Shalya Karma Paricharana (Surgical Nursing), Shalakya Karma Paricharana (ENT & Ophthalmology), Sishu Paricharana (Paediatric Nursing), Stri Roga & Prasuti Tantra Paricharana (Gynaecology & Obstetrics) and Panchakarma.

Theory: 170 hours & Practical: 1080 hours

Course description: This course is designed to help students to develop knowledge and competencies required for assessment, diagnosis, treatment, nursing management and supportive care to patients with various disorders admitted in an Ayurveda hospital

XI. PRACTICUM (SKILL LAB AND CLINICAL)

Total hours: 1570 (40 + 1530)

Practice Competencies:

At the end of the programme students will be able to:

1. Assess patients admitted at Ayurveda hospital settings.
2. Assist and perform special procedures in Ayurveda settings.
3. Prepare and care for patients undergoing various Panchakarma and Kriyakalpa procedures.
4. Administer various types of Ayurvedic formularies as per protocol.
5. Prepare and care for patients undergoing various surgical, para surgical and gynaecological procedures in Ayurveda settings.
6. Assess and manage special group like paediatric and geriatric patients admitted at Ayurveda settings with various disorders.
7. Maintain and store drugs and keep daily record.
8. Conduct patient education program.

1. CLINICAL POSTINGS

S.No.	Areas	Duration (Weeks)	Clinical Learning Outcome	Skills/Procedural Competencies	Assignments	Assessment Methods
1	Out-Patient departments	2	▪ Assist in examination of the patients with various diseases ▪ Assist in diagnostic procedures	▪ History Taking ▪ Physical Examination ▪ Health Education ▪ Assisting in various OPD based procedures	▪ Health assessment report ▪ History taking and physical examination	▪ Observation reports
2	Integrated OPD (Unani, Siddha & Homeopathy)	1	▪ Assist in examination of the patients with various diseases ▪ Assist in diagnostic procedures	▪ History Taking ▪ Physical Examination ▪ Health Education ▪ Assisting in various OPD based procedures	▪ Health assessment report ▪ History taking and physical examination	▪ Observation reports
3	In-Patient Department	12	Provide nursing care for patients admitted with various disorders in the Ayurveda settings	▪ History taking ▪ Physical assessment of patients ▪ Assisting in diagnostic tests ▪ Preparation of patients for various Panchakarma, Kriyakalpa, Shalya and Gynecological procedures ▪ Infection control practices ▪ Pre, Intra and post procedural care of patients ▪ Administration of various Ayurvedic formularies ▪ Diet planning and life style modification ▪ Perform counselling to patients and their relatives	▪ Health assessment report ▪ Case study report ▪ Health Talk ▪ Perform counselling to patients and relatives	▪ Clinical evaluation ▪ Case study report
4	Panchakarma Theatres	9	▪ Preparation of patient for various Panchakarma procedures ▪ Perform various Panchakarma procedures ▪ Perform post procedural care of patients	▪ Perform pre & post procedure care of patients undergoing Panchakarma procedures ▪ Counselling of patients and relatives ▪ Health education and home care ▪ Perform various Panchakarma procedures ▪ Monitor patients	▪ Logbook Report	▪ Clinical evaluation

				for any side effects and outcome		
5	Kriyakalpa Theatres	4	▪ Preparation of patient for various Kriyakalpa procedures ▪ Perform various Kriyakalpa procedures ▪ Perform post procedural care of patients	▪ Perform pre & post procedure care of patients undergoing Kriyakalpa procedures ▪ Counselling of patients and relatives ▪ Health education and home care ▪ Perform various procedures for Eye and ENT ▪ Monitor patients for any side effects and outcome	▪ Logbook Report	▪ Clinical evaluation
6	Operation theatres & ICU	2	▪ Assisting for various surgical and para-surgical procedures in Ayurveda setting ▪ Perform the pre and post procedure care for patients undergoing any surgical procedure ▪ Skills in emergency management	▪ Perform pre and post procedure care for patients undergoing surgery ▪ Assist with various surgical procedures ▪ Identify various instruments used in operation theatres ▪ Gain skills in emergency management	▪ Logbook Report	▪ Clinical evaluation
7	Labour Room (SRPT)	2	▪ Assisting for various procedures in Labour Room ▪ Perform the pre and post procedure care for patients undergoing any procedure	▪ Perform pre and post procedure care for patients undergoing labour process ▪ Assist with various Gynaecological procedures ▪ Identify various instruments used in labour room ▪ New born care at labour room	▪ Logbook report	▪ Clinical Evaluation
8	Pharmacy	2	▪ Observe the preparation of various Ayurvedic formularies ▪ Understand the various raw materials used for preparation of medicines & high alert medicines ▪ Do the stock maintenance and inventory of medicine store	▪ Perform stock entry and inventory management of medicines.	▪ Drug Book	▪ Drug Presentation

9	Department Laboratories	1	▪ Understand the various laboratory experiments for quality checking of Ayurvedic formularies	▪ Assist with various laboratory experiments	▪ Report of posting	
10	Hospital Administration	1	▪ Basic knowledge in administration in management	▪ Assist with roster preparation. ▪ Inventory management	▪ Prepare duty roster of department	
11	Yoga Department & Swasthavritta OPD	2	▪ Gain basic knowledge regarding Aasanas and Yoga practices ▪ Skills in various lifestyle regimens	▪ Practice and gain skill in performing and demonstrating various Aasanas and Yoga practices ▪ Obtain skills in various lifestyle regimens according to Dinacharya and Ritucharya	▪ Report of posting	
12	Clinical Pathology Laboratory	1	▪ Assist with various diagnostic procedures	▪ Collecting samples for various investigations. ▪ Interpreting the results of investigations	▪ Report of posting	
13	Para-surgical & Plaster Room	1	▪ Assisting for various para-surgical techniques like Kshara karma, Kshara sutra, Agnikarma, Raktamokshna, Jaloukavacharanam, Siravyadhana etc. ▪ Assisting for various bandhas & immobilization methods	▪ Identify various instruments ▪ Assisting the surgeon	▪ Logbook Report	
14	Medical Camps	1	▪ Assist in examination of the patients with various diseases	▪ Gain skill in organizing and coordinating the medical camp	▪ Report of posting	

APPENDIX 1

SKILL LAB DEATILS

S.No.	Department/Theatres	Equipment
1	SHALYA TANTRA (SURGERY)	Normal surgical and para surgical instruments
2	PANCHAKARMA	Droni, Nadi swedana, Bashpa swedana, Shirodhara, Vamana chair
3	STRI ROGA & PRASUTI TANTRA (OBG & GYNAE)	Droni, Nadi swedana, Bashpa swedana, Shirodhara, Lithotomy table
4	KAUMARABHRITYA (PAEDIATRICS)	Droni, Nadi swedana, Bashpa swedana, Shirodhara

5	SHALAKYA TANTRA (EYE & ENT)	Droni, Nadi swedana, Bashpa swedana, Shirodhara
6	BHAISHAJYA KALPANA (PHARMACOLOGY)	

APPENDIX 2

Assessment Guidelines (Theory and Practicum)

I. Theory

A. Internal

Ayurveda Speciality Nursing (I & II): Total 25 Marks

- Test papers and Quiz: 10 marks
- Written Assignments: 10 marks
- Group Project: 5 marks

B. External

Ayurveda Speciality Nursing (I & II): Total 75 Marks

- **Part I: 35 marks** (Essay type 1 ×15 marks = 15 marks, Short answers 4 ×4 marks = 16 marks, Very short answers 2 ×2 marks = 4 marks)
- **Part II: 40 marks** (Essay type 1 ×15 marks = 15 marks, Short answers 5 ×4 marks = 20 marks, Very short answers 5 ×1 mark = 5 marks)

II. Practicum

A. Internal (75 Marks)

- **Practical: 75 marks**
  a) Practical assignments - 30 marks (Clinical presentation and case study report - 15, Drug study report - 5, Health talk - 10)
  b) Completion of procedural competencies and clinical requirements: 10 Marks
  c) Continuous clinical evaluation of clinical performance: 10 marks
  d) Final observed practical (Actual performance in clinical): 25 marks.

B. External (150 marks)

- **Observed practical: 150 marks**

APPENDIX 3

Clinical Log Book for Post Basic Diploma in Ayurveda Nursing – Residency Program

(Specific Procedural Competencies/Clinical Skills)

	Specific Competencies/Skills	Performed/ Assisted/ Observed (P, A, O)	Performed		Assisted		Observed		Date and signature of Faculty/ Preceptor
			No.	Sign.	No.	Sign	No.	Sign	
A	**PANCHAKARMA PROCEDURES (ADULT AND PAEDIATRICS)**								
1	**Snehana Processes**								
1.1	Sthanika Abhyanaga	P, A, O							
1.2	Sarvanga Abhyanga	P, A, O							
1.3	Sthanika Pichu	P, A, O							

	Specific Competencies/Skills	Performed/ Assisted/ Observed (P, A, O)	Performed		Assisted		Observed		Date and signature of Faculty/ Preceptor
			No.	Sign.	No.	Sign	No.	Sign	
2	**Swedana Processes**								
2.1	Sthanika Vasthi (Janu Vasthi, Kadi Vasthi, Greeva Vasthi, Prishta Vasthi, Uro Vasthi)	P, A, O							
2.2	Sthanika Parisheka	P, A, O							
2.3	Upanaha Sweda	P, A, O							
2.4	Ekanga Nadee Sweda	A, O							
2.5	Sarvanga Nadee Sweda	A, O							
2.6	Patra Pinda Sweda	P, A, O							
2.7	Sthanika P.P.S.	P, A, O							
2.8	Sarvanga Jambeera Pinda Sweda	P, A, O							
2.9	Sthanika J.P.S.	P, A, O							
2.10	Sashtika Shali Pinda Sweda (SSPS)	P, A, O							
2.11	Shirodhara	P, A, O							
2.12	Shiro Vasthi	P, A, O							
2.13	Salvana Sweda	P, A, O							
2.14	Bashpa Sweda	A, O							
3	**Rookshana Processes**								
3.1	Udwartana	P, A, O							
3.2	Sarvanga Valuka Sweda	P, A, O							
3.3	Sarvanga Rookshana Pinda Sweda	P, A, O							
3.4	Choorna Pinda Sweda	P, A, O							
3.5	Dhanyamla Dhara	P, A, O							
3.6	Matra Vasthi	P, A, O							
B	**KRIYA KALPA PROCEDURES**								

	Specific Competencies/Skills	Performed/ Assisted/ Observed (P, A, O)	Performed		Assisted		Observed		Date and signature of Faculty/ Preceptor
			No.	Sign.	No.	Sign	No.	Sign	
1	Netra Seka	P, A, O							
2	Aschothana	P, A, O							
3	Tarpana	P, A, O							
4	Anjana	P, A, O							
5	Putapaka	P, A, O							
6	Vidalaka	P, A, O							
7	Netra Pindi	P, A, O							
8	Karnapoorana/Karna dhoopana	P, A, O							
9	Kavala/Gandusha	A, O							
10	Shirodhara	P, A, O							
11	Shiro Pichu	P, A, O							
12	Shiro Vasthi	P, A, O							
13	Shiro Abhyanga	P, A, O							
14	Mukha Lepa	P, A, O							
15	Pracchanna Karma	P, A, O							
16	Jaloukavacharanam	P, A, O							
17	Nasya Karma	P, A, O							
18	Kshara Pratisarana	A, O							
19	Moordha Taila	P, A, O							
C	**SHALYA TANTRA PROCEDURES**								
1	Ksharasutra application in Bhagandara	A, O							
2	Agnikarma	A, O							
3	Jaloukavacharanam	P, A, O							

	Specific Competencies/Skills	Performed/ Assisted/ Observed (P, A, O)	Performed		Assisted		Observed		Date and signature of Faculty/ Preceptor
			No.	Sign.	No.	Sign	No.	Sign	
4	Kshara Karma	A, O							
5	Yanthra Vidhi	A, O							
6	Vranoupachara	A, O							
7	Minor and Major operations	A, O							
8	Different types of Bandages	P, A, O							
9	Different types of surgical instruments used in Shalya procedures	O							
10	Types of sutures	O							
D	**STRI ROGA AND PRASUTI TANTRA PROCEDURES**								
1	Yonidhawana	A, O							
2	Uttar Vasthi	A, O							
3	Yoni Pichu Dharana	A, O							
4	Yoni Dhupana	A, O							
5	Yoni Varti	A, O							
6	Yoni Purana	A, O							
7	Yoni Parisheka	A, O							
8	Pap Smear	A, O							
9	Cervical punch biopsy	A, O							
10	Endometrial biopsy	A, O							
11	Cervical cauterization	A, O							
12	Cervical polypectomy	A, O							
13	Hysterosalpingography	A, O							
14	Normal delivery	P, A, O							
15	Dilatation and Curettage	A, O							

	Specific Competencies/Skills	Performed/ Assisted/ Observed (P, A, O)	Performed		Assisted		Observed		Date and signature of Faculty/ Preceptor
			No.	Sign.	No.	Sign	No.	Sign	
16	Tubal ligation	A, O							
17	Bartholin cystectomy	A, O							
18	Ovarian Cystectomy	A, O							
19	Caesarean section	A, O							
20	Abdominal Hysterectomy	A, O							
21	Vaginal Hysterectomy	A, O							
22	Repair of perineal tear	A, O							
23	Dilatation of Cervix	A, O							

Note:

- When the students are found competent to perform the skill, the faculty will sign it.
- Students are expected to perform the listed skills/competencies many times until they reach level 3 competency, after which the faculty signs against each competency.
- Faculty must ensure that the signature is given for each competency only after they reach level 3.
- Level 3 competency denotes that the student is able to perform the competency without supervision.
- Level 2 competency denotes that the student is able to perform the competency with supervision.
- Level 1 competency denotes that the student is not able to perform the competency/Skill even with supervision.

APPENDIX 4

Clinical Requirements

S.No.	Clinical Requirement	Date	Signature of the Faculty/Preceptor
1.	Health Talk		
1.1	Topic:		
1.2	Topic:		
2.	Counselling of Patients and Relatives		
3.	Health Assessment		
3.1	Adult:		
3.2	Child:		
4.	Case Study and Presentation (In each Speciality one each)		
4.1	Name of the clinical condition:		
4.2	Name of the clinical condition:		
4.3	Name of the clinical condition:		
4.4	Name of the clinical condition:		
4.5	Name of the clinical condition:		
4.6	Name of the clinical condition:		
5.	Drug Study, Presentation and Report		

5.1	Drug Name:		
5.2	Drug Name:		
5.3	Drug Name:		
5.4	Drug Name:		
5.5	Drug Name:		
6.	Reports of Visits and Postings		
7.	Group Project		
8.	Ayurveda Formularies File		
9.	Conducting Bed side rounds		

Signature of Faculty/Preceptor Signature of Programme Coordinator

APPENDIX 5

Name of Clinical Area	Clinical Condition	Number of days care given	Signature of the Faculty/Preceptor

Clinical Experience Details (Min. 5 conditions from each department)

Signature of Faculty/Preceptor Signature of Programme Coordinator

Dr. T. DILEEP KUMAR, President, INC
[ADVT.-III/4/Exty./628/2022-23]

Uploaded by Dte. of Printing at Government of India Press, Ring Road, Mayapuri, New Delhi-110064
and Published by the Controller of Publications, Delhi-110054.
MANOJ KUMAR VERMA Digitally signed by MANOJ KUMAR VERMA Date: 2022.02.25 11:29:09 +05'30'